भक्त हृदय के उद्‌गार..

कौन जगह ऐसी बता, जिस जा पे तू नहीं।
नहीं तू बता प्रभु कौन कर्म, जो कर्म भी तू नहीं।।

कैसे तुझे बुलाऊँ मैं, कब तक यूँ मौन रहोगे।
कब तक द्वार मैं खटकाऊँ, कब लग तू मेरी सुनोगे।।

कुछ तुम भी मुख से कहो पिया, हम तोरी शरण में आये।
कोरे मन की चादर ले, तेरे रंग में रंगने आये।।

केसरिया रंग रंग दे इसको, अग्न का रंग कहें।
भस्म करो यह तन मन मेरा, राखी बन जग में रहें।।

- परम पूज्य माँ

प्रार्थना शास्त्र 1/286

17.1.1960

अनुक्रमणिका

1. **भक्त हृदय के उद्‌गार..**
   कौन जगह ऐसी बता..

3. **गृहस्थ आश्रम में रह करके सतमय जीवन!**
   परम पूज्य माँ से पिताजी के प्रश्नोत्तर

9. **पूर्ण वह ही है!**
   डॉ. जे.के. महता

12. **'अपने तन को जब भूल जाओगे, तो आत्मवान बन ही जाओगे..!'**
   अर्पणा प्रकाशन - श्रीमद्भगवद्गीता - 'भगवद् बाँसुरी में जीवन धुन' 3/33-34

15. **प्रेम फुहार हैं गंगा माँ!**
   अर्पणा प्रकाशन - 'गंगा श्रद्धा प्राणप्रद'

20. **दुर्लभ मनुष्य जन्म की सफलता**
   श्रीमता सत्य महता

23. **भक्ति और समर्पण की सुगंध**

25. **तनो वृक्ष पर संग संग, द्वौ पक्षी रे रहते हैं..!**
   मुण्डकोपनिषद्, तृतीय मुण्डक - 1/1

29. **मन का मौन**
   श्रीमती प्रेम कालरा

31. **आपके प्रेम की रोशनाई के दीप जले तो अंधेरे कैसे टिकते?**
   श्रीमती पम्मी महता

34. **अर्पणा समाचार पत्र**

सम्पादक की ओर से

गद्य में प्रस्तुत सभी लेख साधकों के प्रश्नों के उत्तर में परम पूज्य माँ द्वारा प्राप्त सत्संगों पर आधारित हैं और संकलन-कर्ता की निजी समझ के अनुकूल हैं। काव्य की पंक्तियाँ पूज्य माँ के मुखारविन्द से प्रवाहित दिव्य प्रवाह का अंश हैं; जिसे सुश्री छोटे माँ ने लेखनीबद्ध किया है। अपनी पूर्ण सामर्थ्य के अनुसार उसे ज्यों का त्यों प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुति में किसी भूल के लिये हम क्षमा प्रार्थी हैं।

सम्पादक : *पूनम मलिक*
सह सम्पादक : *श्रीमती साधना पाल*

पता : अर्पणा आश्रम, मधुबन, करनाल,
132 037, हरियाणा भारत

श्री हरीश्वर दयाल, अर्पणा ट्रस्ट, मधुबन, करनाल 132 037 01, हरियाणा द्वारा दिसम्बर 2025 को प्रकाशित

गृहस्थ आश्रम में रह करके सतमय जीवन!

पिता जी- बुद्ध धर्म में कहते हैं कि गृहस्थाश्रम में रह करके सतमय जीवन जीना असम्भव तो नहीं, कठिन है.. जैसे मोर के लिये राजहंस की चाल चलना।
'उर्वशी' का इस विषय में क्या विचार है?

परम पूज्य माँ-

कोई कहे गृहस्थ त्यजी ही रे, सत्त्व को पा सकें।
कोई कहे कुल त्यजी ही, तुम तक रे आ सकें ।।1।।

कोई कहे जंगल में, जा कर ही तुझे मना सकें।
कोई कहे आसन लगा, जग त्यज करी ही पा सकें ।।2।।

तुम कहो ओ राम मेरे, उचित विधि रे क्या होये।
कौन विधि है यह 'मैं मेरा', राम रे तुम में जा खोये ।।3।।

सुन रे मना अरे बात सुनो, यहाँ केवल भ्रम की बात है।
'मैं' कहाँ पे टिकी हुई, वा दर्शन की बात है ।।4।।

अपना आप पहचान मना, बन में काहे जात है ।
निज मन से तो निरन्तर ही, जान मना तोरा साथ है ॥5॥

कोई विधि जिसको भायी, उसने विधि वह कह रे दी ।
जहाँ किसी का मन टिका, उस ओर मन वा बह रे ली ॥6॥

तू आपुनो मन की सोच मना, घर त्यागे क्या होयेगा ।
तन तोरा जहाँ जायेगा, मन साथ ही तेरे होयेगा ॥7॥

मन मनाव की बात रे है, ध्यान टिकाव की बात रे है ।
अपना आप उसे देख तो लो, निज दर्शन की बात रे है ॥8॥

गृहस्थ त्यजी जो कहते हो, इसकी कोई बात नहीं ।
अपनी 'मैं' की बात है, वहाँ गृह त्याग की बात नहीं ॥9॥

त्याग किसे रे कहते हैं, प्रथम इसे तो समझ लो ।
कुल त्यागे कुछ नहीं रे हो, मन त्यागे ही त्याग हो ॥10॥

आपुनो तन से संग करे, निज मन के तद्रूप रहे ।
लाख त्यजे तू इस जग को, त्याग नहीं रे हो सके ॥11॥

इसी विधि यह मोह त्यजी, ही तो सत्य को पाओगे ।
रुचि अरुचि में जो मन पड़ा, त्यागे वैरागी हो जाओगे ॥12॥

बार बार परिस्थिति में जा, मन घबरा रे जाता है ।
रुचिकर जिस पल नहीं मिले, यही तड़पा रे जाता है ॥13॥

वैराग्य की बातें गर पूछो, इस मनोत्याग को कहते हैं ।
मान अपमान रुचि अरुचि, के ही त्याग को कहते है ॥14॥

निज मन से जिस पल उठे, त्याग उस पल ही हो जाये ।
निज मन से जब हो परे, वैरागी वह कहलाये ॥15॥

बुद्धि आसरे यह छूटे, फिर बुद्धि सत्त्व में टिक जाये ।
जो राम कहा सो उचित कहा, उस पे जाये के बिक जाये ॥16॥

अपनी मान्यता आपुनो ज्ञान, सों ही जीव जब उठ जाये ।
संन्यास वही कहलाता है, जब त्रैलोक से उठ जाये ॥17॥

स्थूल लोक फिर मनो लोक, फिर बुद्धि लोक से उठ जाये ।
तद्‌रूप जो इनके रे हुआ, तद्‌रूपता छुट जाये ॥18॥

संन्यास तभी रे मानिये, जब सत में चित्त रे टिक जाये ।
अपनी बुद्धि छोड़ करी, राम कथन पे बिक जाये ॥19॥

यहाँ कुल की कहाँ रे बात है, कुल त्यागे क्या पायेगा ।
गृहस्थ में गर रूठ गया, तो मिथ्या दोष लगायेगा ॥20॥

वास्तविक सत्यता भूल करी, असत् में पुनि खो जायेगा ।
जहाँ पे भी मन ले जाये, 'मैं' तो संग ही जायेगा ॥21॥

किसी ने यह अरे क्यों कहा, उसकी बात भी समझ ले ।
आपुनो आपुनो अनुभव है, इसका राज़ भी समझ ले ॥22॥

पर समझो यह ज्ञान है जो, वह कहाँ पे उसे हुआ ।
किस स्थिति में परिस्थिति में, उसको यह अनुभव हुआ ॥23॥

मिथ्यात्व उसने कब जाना, गृहस्थ में जब रहता था ।
सत असत् में निरन्तर ही, 'मैं' उसका जब बहता था ॥24॥

इसको समझ अरे समझ मना, साधन सामग्री कुल ही है ।
इस युग में हाय जान मना, साधना भी यह कुल ही है ॥25॥

उपनिषदन् ने नहीं कहा, निज कुल को तुम छोड़ दो ।
इक भी ऋषि ने नहीं कहा, वा से नाता तोड़ दो ॥26॥

बार बार प्रमाण वहाँ, कुल के संग ही रहते थे ।
पूर्ण के पूर्ण ही वह, सहयोगी बन के रहते थे ॥27॥

विपरीतता भी वहाँ होती थी, अनुकूल भी वह ही रहते थे ।
ऋषिगण और संतगण, कुल में ही रे बैठे थे ॥28॥

गर कृष्ण को पाना है तुमने, तो उसने कुल कब छोड़ दिया ।
विपरीत कुल उसका भया, तब भी न नाता तोड़ दिया ॥29॥

गर राम को पाना है, उसने कुल रे कब छोड़ा ।
जहाँ पे राम ने जन्म लिया, उस नाता कबहुँ न तोड़ा ॥30॥

नानक की भी बात कहें, वह त्याग करी कहीं न गये।
निज कुल कभी भी न छोड़ा, वह तो प्यार करते गये ॥31॥

पहचाने न पहचाने, जो रेखा दिया वह वहीं रहे।
सत जो है इस तन की रे, उसको नहीं रे छोड़ सके ॥32॥

इसको समझ समझ मना, उस सत को ही पाना है।
जो बार बार उस जन्म लिया, लेइ दर्शाया उसे पाना है ॥33॥

सो उनका जीवन ही रे देख, प्रतिपादित जिस सत किया।
उनको ही समझन् कारण, क्यों कहें रे कुल मैंने छोड़ दिया ॥34॥

यह कुल का त्याग जिसे कहते हैं, यह मनो त्याग की बात है।
वहाँ संग मोह लग्न जो था, भ्रम का ही रे त्याग है ॥35॥

हर पल भरमाये करी, कर्त्ता आप रे बन जाये।
राग द्वेष वहाँ बढ़ा करे, 'मैं' समझ ही न आये ॥36॥

जहाँ त्याग की बात रे कहते हैं, है त्याग क्या यह समझ ले।
जब लौ मोह यह न जाये, राम रे कबहुँ नहीं मिले ॥37॥

उस ठीक कहा बिन कुल त्यजी, राम नहीं रे पायेगा।
पर वह पाये जो त्याग का, सत्य समझ रे जायेगा ॥38॥

मनोसंग जो वहाँ पे है, जो भ्रम बनी बनी आता है।
सत्यता जिसके कारणा, यह 'मैं' देख नहीं पाता है ॥39॥

उस सत दर्शन की बात करें, बिन संग त्यजे नहीं हो सके।
स्थूल में ही गर भरमाये, भ्रम परे नहीं हो सके ॥40॥

पुनि समझ वह क्या कहें, सत से संग रे चाहिये।
असत् सों जो तेरा संग है, उसको छोड़ के आइये ॥41॥

जीव असत् है नहीं कहा, वेदांत में भी नहीं कहा।
उनने कहा है जग असत्, पर यह असत् रे किसे कहा ॥42॥

जग असत् जग ब्रह्म कहा, और कहा मिथ्यात्व जो।
फिर कहा पूर्ण है वह, असत्यता वहाँ क्या अब हो ॥43॥

असत्य जिसे रे कहते हैं, वह ‘मैं’ का ही रे जाल है।
कहें ‘मैं’ कहीं है नहीं, इसमें ही वह राज़ है ॥44॥

जो जग जाना असत्य है, जो ब्रह्म नहीं रे दर्शाये।
वह ‘मैं’ ही है अरे जान, जो ब्रह्म नहीं रे हो पाये ॥45॥

पुनि कहें बार बार, जग असत् है जान लो।
फिर वहीं पे वह ही कहें, पूर्ण ब्रह्म है मान लो ॥46॥

सो असत् ‘मैं’ है जान ले, कुल की कोई बात नहीं।
गृहस्थ में जो तोरा संग है, उस बिन कोई बात नहीं ॥47॥

यह भ्रम मोह में जो पड़ा, जो सत देखन् नाहिं दे।
वही भ्रम अरे जान मना, आवृत सत सों नित्य करे ॥40॥

इस ‘मैं’ ने जो जग रचा, इस ‘मैं’ ने जो भरमाया।
इस ‘मैं’ ने जो सोचा वह है, वह मिथ्या लोक बनाया ॥49॥

‘मैं’ जो कहे उसे जान मना, व्यष्टि कोण से कहती हूँ।
तनो तद्रूप हो करी, तनो कोण से कहती हूँ ॥50॥

व्यक्तिगत जब ‘मैं’ भये, व्यक्ति का जब रूप धरे।
‘पूर्ण एक है’ तव मूल योजन, ‘मैं’ का तब कहे ॥51॥

जब ‘मैं’ योजन बनाती है, प्रयोजन निज बताती है।
समष्टि से तब जानो, ‘मैं’ बिछुड़ रे जाती है ॥52॥

‘मैं’ का लोक जितना है, जान मना असत् रे है।
उसको त्याग वह कहते है, इतना ही वहाँ सत रे है ॥53॥

यह कुल के त्याग की बात नहीं, कुल वृत्तियाँ आपुनो ही तो हैं।
यहाँ संगी मोही भ्रमपूर्ण, मनो वृत्तियाँ ही तो हैं ॥54॥

ज्येष्ठ पुत्र तोरा मन ही है, इसके त्याग की कहते हैं।
‘मैं’ की बहू यह बुद्धि है, इसके त्याग की कहते हैं ॥55॥

‘मैं’ का घर यह तन रे है, इसके त्याग की कहते है।
पूर्ण कुल यह आंतर है, वा से वैराग्य की कहते हैं ॥56॥

गर समझ सके तो समझ ले, यह लोक आंतर में होये ।
यह न रहे तो मौन भये, कौन कहाँ पर तन खोये ।।57।।

तन जाये जहाँ जाये, जो आये सो आ जाये ।
आपुनो योजन कोई नहीं, जो होये होता जाये ।।58।।

'मैं' देखे पर न देखे, मन देखे पर न देखे ।
नयन सब ही दर्शन लें, दर्शन करी के न देखें ।।59।।

विधि जान अरे जान मना, स्थूल त्याग की बात नहीं ।
इस 'मैं' को आप ही जान ले, यहाँ और कोई बात नहीं ।।60।।

सत में गर तोरा संग होये, यह सब छूट ही जायेगा ।
तनो नाते की बात नहीं, तोरा मोह यह टूट ही जायेगा ।।61।।

यह कैसे कहो कहीं जन्म जो हो, तुम कहो पितु नहीं मेरा ।
जिस गर्भ से जन्म लो, मातु कहा वह नहीं मेरा ।।62।।

भाई जिसको कहते हैं, गर कहो यह नहीं मेरा ।
वह मिथ्या बातें कहते हैं, मिथ्यात्व ने है इसको घेरा ।।63।।

जो जैसा देख ले, स्थूल में जो है देख ले ।
मोह त्यजी सत भरो, हर शास्त्र यही कहे ।।64।।

यहाँ कुल त्याग की बात नहीं, आंतर कुल भरमाये है ।
कोई रोके नहीं तुझे, तोरी वृत्ति ही रोके जाये है ।।65।।

आप ही संग कर करी, कहीं जाये लिपट जाये ।
आप लिपट के स्थूल में, स्थूल को दोष लगाये ।।66।।

आप संग कहीं किया, जहाँ संग किया वहाँ दोष धरे ।
वहाँ पे दोष छोड़ करी, संग वृत्ति काहे नहीं देख तू ले ।।67।।

विधि एक है राम कहो, सत सम्मुख आप धरो ।
'मैं' क्या है देख लो, और सत के जा तद्रूप होवो ।।68।।

इतनी सी तो बात है, इसे समझ करी कहो राम राम ।

राम राम राम............ 9th Apirl,196

पूर्ण वह ही है

संकलन - डॉ. जे.के. महता

(1959 के एक सत्संग में भगवान की पूर्णता के विषय में प्रश्न करने पर, जीवन में उसे लागू करने की विधि पूज्य माँ ने समझाई, जो हर साधक के लिये अनुसरणीय है।)

प्रश्नः ईशावास्योपनिषद् में यह शान्ति पाठ आता हैः

"ओम् पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।।"

इसका अर्थ क्या है, तथा आधुनिक जीवन के सन्दर्भ में यह कैसे लागू होता है?

पूज्य माँ : जिस साधक ने ब्रह्म को जान लिया वह ब्रह्म को दर्शाने की कोशिश करता है, और कहता है, "हे भगवान! तू पूर्ण है और तुझ में से यदि पूर्ण निकाल दिया जाये तो भी पूर्ण ही रहता है।"

इसे इस प्रकार समझो, जैसे :

(क) पृथ्वी के किसी भाग को सीमित करके उसे जर्मनी, इटली, इंग्लैंड, भारत, चीन इत्यादि नाम दिया जाता है, परन्तु यह सब अलग हिस्से होने से पूर्ण पृथ्वी में तो कोई भेद नहीं आता, वह तो ज्यों की त्यों ही बनी रहती है।

(ख) आकाश तो एक ही है, एक लोटे के पानी में उसकी आकृति वाला आकाश बाकी आकाश से अलग तो नहीं हो जाता, आकाश तो ज्यों का त्यों ही बना रहता है।

(ग) सूर्य की गर्मी से जल की वाष्प समुद्र से उठी, ऊपर जा कर ठण्डी हुई, पर्वतों से टकराई, वर्षा बन कर धरती पर गिरी और पुनः नदी नालों के द्वारा समुद्र में जाये मिली। फिर दुबारा भाप बनी, ऊपर उठी। यह क्रिया तो निरन्तर होती ही रहती है। परन्तु क्या इससे समुद्र में कोई अन्तर आता है? वह तो वैसे का वैसा ही रहता है। इसी प्रकार पूर्ण ब्रह्म में से पूर्ण सृष्टि निकालने पर भी उस में कोई अन्तर नहीं आता।

भगवान कहते हैं **"मम साधर्म्यमागताः"**

श्रीमद्भगवद्गीता - 14/2

अर्थात्- *'मुझ जैसा हो जा, तू मुझे पा लेगा।'*

उस स्थिति को पाने पर हम राममय हो जायेंगे। कृष्ण की पूजा करने पर हम कृष्णमय हो जायेंगे। इसी प्रकार यदि ब्रह्म का नाम लिया तो ब्रह्ममय हो जायेंगे। भगवान कहते हैं, "हे मनुष्य! तू मुझे अपना लक्ष्य बना!" हम न जाने किन कर्मों में पड़ कर जन्म मरण के बंधन में पड़े रहते हैं। भगवान जैसा होने में भी हमें न जाने कितने जन्म लगेंगे, परन्तु इसका प्रयत्न तो कर!

ऐ मूर्ख मन! यदि सारा संसार ही ब्रह्म है, तो तू भी क्यों ब्रह्ममय नहीं हो जाता? उस अवस्था को पाकर अलौकिक आनन्द की प्राप्ति कर उस परम ब्रह्म परमात्मा के चरणों की धूल बन तो तेरा जन्म सफल हो जायेगा, क्योंकि तू तो उसका अंश मात्र ही है! अरे मूर्ख! तू क्यों इस संसार चक्र के खिलवाड़ में फँसकर अपना समय नष्ट कर रहा है?

साधक कहता है, "हे राम! जब तू पूर्ण है तो मुझे समझ क्यों नहीं आता, मैं इसे क्यों स्वीकार नहीं करता? मुझ में यह अहंकार क्यों है जिसके कारण पूर्ण तू होते हुए भी मैं यह समझ नहीं पाता?"

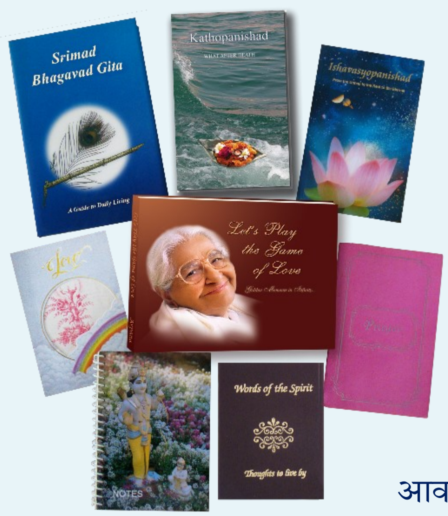

भगवान को पाने के लिये हमें किसी का सहारा लेना पड़ता है। भगवान के लिए "एक ओंकार" शब्द प्रयोग में लाया गया है। "ओंकार" मानो उस ब्रह्म का झण्डा है, उस का प्रतीक है- कि वह ब्रह्म ही एक सत्य है। जैसे; जब हम पत्थर की मूर्ति की पूजा करते हैं तो उसे पत्थर समझकर नहीं करते, बल्कि उसमें हमारी भावना भरी होती है।

हम मूर्ति को पत्थर समझ कर सीस नहीं झुकाते, हम उसे भगवान मानते हैं। इस के लिये यह समझ आना आवश्यक है कि सर्वत्र केवल एक वह ही है।

श्रीमद्भगवद्गीता, उपनिषद् और सम्पूर्ण शास्त्र ही भगवान की उपलब्धि का एकमात्र साधन हैं। उन को समझने का केवलमात्र यही प्रयोजन है कि हम जैसे मूर्ख समझ जायें कि पूर्ण सब एक ब्रह्म ही है।

मैं शव रोग में फंसा हुआ हूँ.. भगवान ने गीता में कहा है कि कर्त्ता, भोक्ता, महेश्वर वह स्वयं ही हैं। यदि मैं यह जान जाऊँ कि पूर्ण वह ही हैं, तो मैं इस जाल से छूट सकता हूँ। मृत्यु को भी इसी दृष्टिकोण से देखा जाये कि वह परमात्मा का ही अंश है। प्रत्येक तत्व मृत्यु के पश्चात् अपने अपने स्थान पर चला जाता है, परन्तु भगवान का कुछ अधिक या न्यून नहीं होता; जब हम इस भाव को समझेंगे तो राममय ही हो जायेंगे, अर्थात् अद्वैत में स्थित हो जायेंगे। यदि इस बात को पूर्ण रूप से समझ लिया जाये तो मानो हम पूर्ण को प्राप्त हो गये।

परन्तु उस पूर्ण ब्रह्म को, उस परम सत्य को जानने के लिये तड़प की आवश्यकता है, उस के लिये पूर्ण पुरुषार्थ चाहिये। पुरुषार्थ मल धोने का कार्य तो करता है परन्तु वह ब्रह्म को नहीं पा सकता। चित्त के पावन होने पर साधक स्वर्गादिक सुख तो भोगता है, परन्तु ब्रह्म को प्रकट नहीं कर सकता। ब्रह्म तो अपने आप को स्वयं प्रकट करते हैं, वह स्वयं इसका आश्वासन दिलाते हैं।

ऐ साधक! तूने कुछ पुरुषार्थ करना है तो आन्तरिक मल धोने का पुरुषार्थ कर, फिर राम को बुला! जिस प्रकार अर्जुन को भगवान ने दिव्य चक्षु देकर विराट रूप के दर्शन करवाये, उसी प्रकार तुझे भी भगवान अवश्य अपना लेंगे। अरे वह तो अपनाते हैं, परन्तु तू ही नहीं मानती। उन्होंने संसार में तुझे सब कुछ दिया, एक बार तू भी उन्हें कह तो सहीः

"यह सब तो मैं पा चुकी, अब मैं क्या करूँ?
इक वर मुझको न मिला, प्रभु तुमको ही वरूँ।।1।।

यह सब तो तूने दे दिया, अब अपनी राह बता।
अब चैना तब पाऊँगी, जब माला देहु पहरा।।2।।

पूर्ण इक तू ही है प्रभु, इस का अनुभव करा।
अनुभव के ही कारणा, मैं फिर जन्मूँगा।।3।।

अनुभव नहीं मुझे हो रहा, मेरा मन है तड़प रहा।
तेरे दर्शन को राम मेरे, हर क्षण है तरस रहा।।4।।"

❖ ❖ ❖

अपने तन को जब भूल जाओगे,
तो आत्मवान बन ही जाओगे..

सदृशं चेष्टते स्वस्याः प्रकृतेर्ज्ञानवानपि।
प्रकृतिं यान्ति भूतानि निग्रहः किं करिष्यति।।

श्रीमद्भगवद्गीता - 3/33

देख नन्हीं! भगवान कहने लगे हैं कि :

शब्दार्थ :

1. **सभी प्राणी प्रकृति को प्राप्त करते हैं।**
2. **ज्ञानवान भी अपनी प्रकृति के सदृश चेष्टा करता है,**
3. **फिर ज़बरदस्ती गुण दमन करने से क्या होगा?**

तत्व विस्तार :

नन्हीं! भगवान कहने लगे कि प्रत्येक जीव में प्रकृति के दिये हुए गुण हैं। ज्ञानवान को भी प्रकृति ने गुण दिये हैं और ज्ञानवान को भी प्रकृति के दिये हुए गुणों के अनुकूल चेष्टा करनी पड़ती है।

देख! ध्यान से सुन! भगवान कहते हैं :

1. अपने गुणों का दमन न कर देना।
2. अपने गुणों को नाहक गंवा न देना।
3. अपने गुणों को कुचलने के यत्न क्यों करते हो?
4. अपने गुणों को कैद करने के क्यों यत्न करते हो?
5. अपने गुणों को नष्ट करने अथवा मिटाने के यत्न क्यों करते हो?
6. अपने गुणों के स्वभाव के विरुद्ध क्यों जाना चाहते हो?
7. प्रकृति ने आपको निहित रूप में जो शक्ति दी है, उसे क्यों व्यर्थ गंवाना चाहते हो?

आपको प्रकृति ने जो गुण दिये हैं, निष्काम भाव से उन्हीं गुणों द्वारा आपका तन दूसरों के काम क्यों नहीं आता?

क) ज्ञानवान जन भी अपने गुणों के अनुसार चेष्टा करते हैं, भेद इतना है कि वह निरासक्त हुए, निष्काम कर्म करते हैं।

ख) वह अपनी स्थापना के लिये कुछ नहीं करते, यथाशक्ति औरों के लिये सब करते हैं।

ग) वह अपने तन के कारण अपने गुण इस्तेमाल नहीं करते, वह तो सम्पूर्ण गुणों सहित, अपने तन के प्रति ममत्व भाव त्याग कर, साधारण लोगों के समान ही काज करते हैं।

नन्हीं! प्रकृति के दिये हुए गुणों पर अपना अधिकार तो नहीं है किन्तु इस संसार को पूर्ण अधिकार है। गर तू सच्ची साधिका है और आत्मवान बनना चाहती है, तो :

1. गुण सहित अपना तन लोगों को दे दे।
2. तन जो भी करे उसमें कर्तापन का भाव न आने दे।
3. तन जो भी करे उसमें निष्कामता का नित्य संरक्षण करते रहना।
4. लोगों पर जो तुम्हारे अधिकार हैं उन्हें छोड़ दो।
5. तनत्व भाव अभाव का अभ्यास करोगे तो तुम्हारे तन पर जो भी अपना अधिकार समझता है, उसे न छोड़ देना।
   - क) अपने गुणों से और दूसरों के गुणों से अप्रभावित हो ही जाओगे, यानि गुणातीत हो ही जाओगे।
   - ख) तत्पश्चात् आपके आन्तर से दैवी सम्पदा बह ही जायेगी।
   - ग) फिर बुद्धि शान्त हो जायेगी और आप स्थितप्रज्ञ बन ही जाओगे।

फिर जब अपने तन को भूल जाओगे, तो आत्मवान बन जाओगे।

इन्द्रि:यस्येन्द्रियस्यार्थे रागद्वेषौ व्यवस्थितौ।
तयोर्न वशमागच्छेत्तौ ह्यस्य परिपन्थिनौ।।

श्रीमद्भगवद्गीता - 3/34

भगवान कहते हैं, मनुष्य को चाहिये कि वह:

शब्दार्थ :

1. **ज्ञानेन्द्रियों को, इन्द्रियों के विषय में स्थित जो राग द्वेष हैं,**
2. **उन दोनों से वशीभूत न होने दे,**
3. **क्योंकि वह दोनों इसके (पुरुष के),**
4. **पथ में विघ्न डालने वाले हैं।**

तत्व विस्तार :

भगवान कहते हैं कि इन्द्रियों को विषयों में स्थित राग और द्वेष के वश में न होने दे।

नन्हीं आभा! प्रथम, राग और द्वेष को समझ ले।

राग :

क) पसन्द को कहते हैं।
ख) रुचि पूर्णता को कहते हैं।
ग) आकर्षण को कहते हैं।
घ) सहानुभूति को कहते हैं।
ङ) लग्न को कहते हैं।
च) लोलुपता को कहते हैं।
छ) स्नेह को कहते हैं।
ज) प्रिय को कहते हैं।

जहाँ राग हो जाता है, जीव :

1. उस विषय को पाने के लिये नित्य यत्न करता रहता है।
2. उस विषय का लोभी हो जाता है।
3. उस विषय के आश्रित हो जाता है।
4. उस विषय का आसक्त हो जाता है।
5. उस विषय का चाकर बन जाता है।
6. उस विषय के बारे में न्याय नहीं कर सकता तथा उसके प्रति अन्धा हो जाता है।
7. उस विषय के कारण निर्बल हो जाता है।
8. उस विषय की प्राप्ति के लिये सब कुछ करने को तैयार हो जाता है।

यदि जीव को वह वस्तु प्राप्त न हो तो जीव अतीव विचलित हो जाता है। विषय से राग ही

जीव को सद्गुणों से दूर कर देता है तथा क्रूर कर्म करने पर मजबूर कर देता है।

द्वेष :

नन्हीं! अब द्वेष को समझ ले :

1. द्वेष का अर्थ अरुचिकर कह लो।
2. द्वेष घृणा तथा शत्रुता को कहते हैं।
3. द्वेष विरोधपूर्ण मनोभाव को कहते हैं।
4. द्वेष अनिच्छा को भी कहते हैं।
5. द्वेष ईर्ष्या को भी कहते हैं।

जिस विषय से द्वेष हो जाये, जीव उसे छोड़ और तोड़ देना चाहता है और उससे दूर भागना चाहता है। जीव उससे शत्रुता करने लग जाता है और उसे दूर करने के लिये सब कुछ करने को तैयार हो जाता है। उस द्वेषपूर्ण विषय के मिटाव के लिये जीव अनेकों अनुचित काज भी करने लगता है।

नन्हीं राग और द्वेष ही :

क) जीव को निर्दयी बना देते हैं।
ख) जीव को अन्धा बना देते हैं।
ग) जीव को व्यक्तिगत कर देते हैं।
घ) जीव को विषय की सत्यता नहीं देखने देते।
ङ) जीव को बुद्धिहीन कर देते हैं।
च) जीव की शान्ति को भंग कर देते हैं।
छ) जीव को नित्य उत्तेजित कर देते हैं।
ज) जीव को निर्बल बना देते हैं।

इस राग और द्वेष के कारण ही जीव अपनी शक्तियों का नित्य दुरुपयोग करता है और अपनी श्रेष्ठता से गिर जाता है।

नन्हीं! यदि तुम ध्यान से देखो तो जान जाओगी कि यह राग और द्वेष ही :

1. मोह उत्पन्न करते हैं।
2. अज्ञान को उत्पन्न करते हैं।
3. बुद्धि को आवृत करते हैं।
4. अतृप्ति का कारण हैं।
5. उद्विग्नता का कारण है।
6. जीव में ममत्व भाव का कारण भी हैं।
7. जीव के मन में विकार उत्पन्न तथा एकत्रित करते हैं।
8. उदासीनता के नित्य वैरी हैं।
9. निरपेक्षता के नित्य वैरी हैं।
10. निरासक्ति के नित्य वैरी हैं।
11. स्थिर बुद्धि के नित्य वैरी हैं।
12. जीव को प्रेय पथ की ओर नियोजित करने वाले हैं।

इस कारण भगवान कहते हैं कि यह दोनों ही पथभ्रष्ट करने वाले हैं। इन दोनों के वश में नहीं होना चाहिये। यही तो जीव को उसकी इन्सानियत से गिरा देते हैं और उसके स्वरूप से वंचित कर देते हैं। इन्सान के लिये, विशेषकर साधक के लिये, इन्हें वश में करना अनिवार्य है।

नन्हीं! हर राग में द्वेष भी निहित है तथा हर द्वेष में राग भी निहित होता है। एक विषय से राग हो जाये तो उस विषय की प्राप्ति की राह में जो आये, उससे द्वेष हो जाता है। इन्सान उस विषय को मिटाने के लिये क्या कुछ नहीं कर बैठता? किसी भी राग युक्त स्थिति या विषय को पाने के लिये जीव द्वेष करता है।

राग और द्वेष, दोनों आसक्ति के कारण उठे हुए मनोविकार हैं। आसक्ति ही इनकी जन्मदायिनी माँ है। आसक्ति से प्रथम राग उठता है तत्पश्चात् द्वेष उठ आता है। किन्तु गर ध्यान से देखें तो राग और द्वेष दोनों एक साथ ही जन्म लेते हैं। जहाँ राग है, वहाँ द्वेष भी होगा ही। इनको अलग करना कठिन है। ❖

प्रेम फुहार हैं गंगा माँ!

('गंगा श्रद्धा प्राणप्रद')

टूरिस्ट बंगलो, हरिद्वार
12 नवम्बर, 1971

12 नवम्बर को पूज्य माँ और श्रीमती कमला भंडारी हरिद्वार में गंगा तट पर स्थित टूरिस्ट बंगलो में आ गये। सायंकाल गंगा जी के तट पर पूज्य माँ और श्रीमती कमला भंडारी के मध्यांतर प्रश्नोत्तर हुए:

श्रीमती कमला भंडारी : माँ! आपने कहा है कि गंगा प्रेम फुहार है, अब वह फुहार मेरे को न मिले तो मुझे उसका अनुभव कैसे हो? मैंने माना कि मेरा चित्त शुद्ध नहीं, पर गंगा के किनारे शुद्ध करने ही तो आई हूँ।

पूज्य माँ : आप तो उसे मिलना भी नहीं चाहती थीं।

श्रीमती कमला भंडारी : मुझे अपनी अज्ञानता में यह नहीं पता चला कि मिलना किसे कहते हैं, कैसे मिलना चाहिये, यह सब अभी गंगे ने ही सिखाना है। गंगा मुझ को सिखाये, मुझ जैसी को भी खेंच ले। मेरा मन तो यही चाहता है कि मैं खिंची जाऊँ, दिल तो सच बहुत चाहता है।

पूज्य माँ : तुमने तो कहा था, 'गंगा से तुम्हें कोई प्यार नहीं है।' तुम तो उससे मिलना भी नहीं चाहती थीं। तुम्हें तो मना कर ले जाना पड़ा। तुम कहती थीं, 'यह भी कोई समय है?' अरे, गंगा के देश में आकर गंगा से मिलने का कोई निश्चित समय या तिथि होती है? फिर जिसकी शरण में आये, उसे ही न मिले! फिर कहते हो, 'प्यार नहीं, हम नहाने नहीं जाते।' फिर कहते हो, 'गंगा का पानी बहुत मलयुक्त है, तुम नहाना नहीं चाहते!' अरे भाई! ऐसी बातों में, तुम ही बताओ, हम क्या करें?

श्रीमती कमला भंडारी : मैं तो मूर्ख हूँ, पर गंगा तो पावनी है, मुझे भी तो पावन कर सकती है।
पूज्य माँ : तुम यह अब कहती तो हो, मानती कब हो?

श्रीमती कमला भंडारी : मैं मानूँगी तो तभी जब मुझे इसका अनुभव होगा। अब आप कहते हैं इसलिये मानती हूँ, पहले लोग कहते थे तो नहीं मानती थी। आप कहते हैं तो लगता है कि बात तो कुछ ज़रूर है, मैं भी तो उसका प्रसाद लूँ। अब मन तो बहुत चाहता है, झूठ नहीं कह रही।

पूज्य माँ :

गर सच ही तोरा मन कहे, पावन गंगा कर देगी।
गर सच ही तुझको प्यार है, वह महा प्रेम से भर देगी।।1।।

गंगा में वह शक्ति है, गंगा राम की भक्ति है।
गंगा को तू समझ तो ले, बस गंगा ही इक भक्ति है।।2।।

प्यार करी के देख तो ले, अंग मिला के देख तो ले।
नयनन् में प्यार भरी, इक बेरी उसे देख तो ले।।3।।

मन में उमंग तरंग लेई, वा तरंग से मिला रे दे।
पावनता तो दूर रहे, पल में हृदय रे झूम उठे।।4।।

गर तू कहे मुझे प्यार नहीं, गंगा में विश्वास नहीं।
और कहे तू बार बार, यह गंगा तेरी आस नहीं।।5।।

तुम ही कहो वह क्या करे, वह तो बहती जायेगी।
लाख आये तू तट पर रे, कुछ समझ नहीं आयेगी।।6।।

बुद्धि राही दर्शन वा का, तू मूर्ख रे चाहती है।
तेरी बुद्धि में उसकी, बात कभी नहीं आती है।।7।।

बुद्धि को तू भूल जा, शिव से गंगा है री बही।
शिव प्रेम की महिमा वह, वह महिमा तू देख सही।।8।।

शिव के मस्तिष्क से निकली, पावनी बन के बहती है।
महा अपावन जग करे, पर फिर भी पावन रहती है।।9।।

जग की बात भी भूल जा, जो दीखे उसे भूल जा।
शिव को अब रे याद करी, गंगा तट पर तू री जा।।10।।

गंगा से शिव माँग ले, गंगा से अरे प्यार कर।
राम का नाम लेई करी, गंगा की री पुकार कर।।11।।

जो चाहो उसे हिय धरी, गंगा तट पर आ बैठो।
गंगा से सच सच कह दो, मैंने मिलना है पावन कर दो।।12।।

गर सच ही बात कहो गंगा से, वह पूर्ण सब कुछ कर देगी।
गर झूठी बात वहाँ कही, ज्यों का त्यों तुझे धर देगी।।13।।

श्रीमती कमला भंडारी : मैंने कहा था मुझे गंगा में अभी विश्वास नहीं, पर मैं जानती हूँ यह हीरा है, क्या जानूँ किस कीमत का, बिन निज अनुभव के कैसे मानूँगी? यह शक्ति मुझे गंगा नहीं तो कौन देगा कि मैं देख सकूँ, समझ सकूँ और मान सकूँ?

पूज्य माँ : तो कहो न गंगा से, माँगो न गंगा से! गंगा से सब बातें तो कर सकते हो, क्या यही बात नहीं कर सकते? अश्रद्धा पूर्ण घातें तो निस्संकोच कीं, श्रद्धा पूर्ण बातें करने से संकोच क्यों?

श्रीमती कमला भंडारी : क्या गंगा मेरी बात सुनेगी?

पूज्य माँ : क्यों नहीं सुनेगी? गंगा को व्यक्तिकरण करो, उसे व्यक्तित्व दो, उसको हक़ीक़त समझो और बात करो! वह पावन है, वह शिव की निशानी है, यह जान कर बात करो! पावन करनी गर नहीं मानते तो न सही, पावनता मान कर बात करो! दु:ख हरनी नहीं मानते तो आनंद की महिमा जान कर बात करो! शिव नहीं देखा, शिव बन नहीं सके, तो शिव जान कर बात करो! अजी बात तो करो, कुछ तो कहो! गंगा से बात नहीं करते तो वह ख़ामोश रहती है, तब वह केवल एक नदिया है जिसमें लोग नहाते हैं। उससे अपने हृदय की बात करो, अपने मन की बात करो, जो बुद्धि कहना चाहती है वही कहो - कुछ कहो तो सही! तुम तो कहते ही कुछ नहीं हो। उलटी बात कहते हो कि हम गंगे को मिलने नहीं जायेंगे।

श्रीमती कमला भंडारी : लाखों मुझसे श्रेष्ठ, श्रद्धा पूर्ण जन गंगा तीर आये और लौट गये, वह भी पावन प्रतीत नहीं होते, मेरा यह अनुभव है। गर गंगा में ऐसी पावन शक्ति होती, तो जो आता वही पावन हो जाता। यह सोच कर गंगा पर विश्वास नहीं रहा। कृपया कहें, यह क्या बात है? मैं क्या करूँ और ऐसा क्यों?

पूज्य माँ :

पावन गंगा उसको करे, जो पावनता चाहे।
अपावन जग को जो कहे, पावन हो नहीं पाये।।1।।

अपावन हम हैं जान लो, दूजा अपावन नहीं कहो।
चाकर गर रे बनना है, तो गंगा से तुम बात करो।।2।।

गर समझो गंगा नहाई करी, मैं रे श्रेष्ठ हो जाऊँगी।
तो जानो कछु नहीं मिले, नाहक समय गवाऊँगी।।3।।

गर शिव रूप रे धरना है, नाग पे शय्या उनकी हो।
भव सागर में वह रे बसें, विषमय जीवन उनकी हो।।4।।

नाग लिपटें वा कंठ से, वह निरंतर मौन रहें।
शिव करें शिव सब का रे, बुरा किसी को नहीं कहें।।5।।

गंगा तट पे जायें लोग, मल धोना वह चाहते हैं।
जग में जो रे दु:ख दिये, निजात उनसे चाहते हैं।।6।।

वा फल उन्हें नहीं मिलें, वह बीज मिटाना चाहते हैं।
ख़ुद बदलें पुनि नहीं करें, अस भाव नहीं वह लाते हैं।।7।।

जग को बुरा कही करके, वह गंगा तट पे जाते हैं।
ख़ुद को श्रेष्ठ वह मान करी, आसन वहाँ लगाते हैं।।8।।

उसे गंगे माँ से कुछ न मिले, जो इतना इतराते हैं।
गंगा उसको सब कुछ दे, जो प्यार करना चाहते हैं।।9।।

सोच ले क्या तू माँगे अब, क्या तेरी रे चाहना है।
तुझे अपना आप देना है, या यह जग ठुकराना है।।10।।

गर तन देना है धरती को, तब गंगे माँ से रे कहो।
गर मन देना हो इस जग को, तब माँ को तुम पुकार लो।।11।।

बुद्धि गुमान रे त्याग की गर, चाहना है तो उसे कहो।
गर अपना आप रे देना है, जाके गंगा को दे दो।।12।।

मर कर हड्डियाँ जायेंगी, जग वाले छोड़ के आयेंगे।
हरिद्वार पे तुम पहुँचे, यह सोच के छोड़ वह आयेंगे।।13।।

तुम जीते जी यह तन दे दो, मर के दिया तो क्या रे दिया।
जिसने जीते जी रे दिया, गंगा का रुख ही बदल गया।।14।।

इसका ध्यान धरी के जा, साचो माँग लेई के जा।
क्या पाना है गंगा से, उसका अनुमान लेई कर जा।।15।।

पावन वह रे कर देगी, तोरी राही वह बह जायेगी।
सच मानो कहूँ अनुभव से, तू ख़ुद गंगा हो जायेगी॥16॥

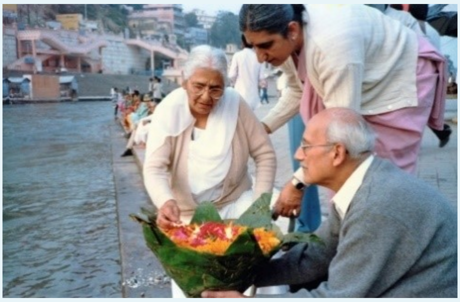

श्रीमती कमला भंडारी : आपने कहा है कि गंगा को अपना आप दे दो, जीते जी तन दे दो, इसकी पूरी समझ नहीं आई। यह गंगा को जीते जी तन दे देना, अपना आप दे देना, इसका क्या अर्थ है?

पूज्य माँ :

गंगा में यह मानो तुम, बहु काल से मान रहे।
जिस धर्म में जन्म हुआ, उस धर्म की राह से मान रहे॥1॥

इस ही कारण तन तजे, जब तू अरे राखी भये।
फूल चुनी के ले आयें, और सबके फूल गंगा में बहे॥2॥

वह मौन हड्डियाँ उसको दीं, निष्प्राण हड्डियाँ जाये धरीं।
जब उनमें कोई गंध नहीं, तब जाई उसमें रे भरीं॥3॥

गर सच मानो गंगा में, जीते जी उसे तन दे दो।
मौन हड्डियों से जानो, पावन तेरा कुछ न हो॥4॥

क्यों न यह हम मान लें, हम जीते जी ही आये हैं।
जग वाले क्या लायेंगे, हम ख़ुद ही चले रे आये हैं॥5॥

मेरी हड्डियाँ तुझको कौन दे, इस पल हम ही देते हैं।
जीते हैं अब तेरे लिये, और जीते जी ही देते हैं॥6॥

तू पावन कर या न भी कर, हम तो तुम्हारे हो लिये।
अब केवल शिव को पाना है, आई यह चाहना रे लिये॥7॥

मर कर शिव तक पहुँचेंगे, मर कर ब्रह्म को पायेंगे।
मर कर लोग रे हमें कहें, जब मौन हड्डियाँ लायेंगे॥8॥

हम तुमसे ओ गंगे री, जीते जी ही माँगे हैं।
इस पल शिवमय तुम करो, शिव जाई से माँगे हैं॥9॥

क्रमशः

दुर्लभ मनुष्य जन्म की सफलता

श्रीमती सत्या महता

मनुष्य जन्म बड़ा ही दुर्लभ है। बाकी सब योनियाँ तो भोग योनियाँ ही हैं, जहाँ जीव अपने अपने कर्मों का भुगतान करता है; एक मनुष्य योनि ही ऐसी है, जहाँ जीव सोच, विचार और चिन्तन कर सकता, अपने लक्ष्य अथवा जीवन का ध्येय जान सकता है। जिस ईश्वर ने उसे पैदा किया है, वह उसी को जान कर उस परमात्मा से एकत्व प्राप्त कर सकता है। इस जीवन में ही भगवान से योग करके मुक्त हो सकता है जीवन के दुःखों-सुखों से और जन्म मरण के चक्र से।

शास्त्र द्वारा मार्गदर्शन

मनुष्य अपने अन्दर झाँककर अपनी त्रुटियाँ ठीक कर सकता है और सही रास्ते पर चल सकता है। शास्त्र कथित राह पर चल कर मनुष्य ईश्वर को जान सकता है। जिन आवरणों के कारण मनुष्य की ईश्वर से दूरी हो गई, शास्त्र उन्हें जानने और पहचानने की राह बताते हैं और उन्हें दूर करने के ढंग भी बताते हैं।

शास्त्र अवतारी पुरुषों के जीवन पर प्रकाश डालते हैं। अवतारी पुरुष भी तन, मन और बुद्धि रूप से तो हम जैसे ही थे, उनकी परिस्थितियाँ भी प्रायः वैसी ही थीं, जैसे कि हमारे जीवन में नित्य प्रति आती हैं। यदि इस सब में वर अपने जीवन राही सत प्रमाणित कर सके, तो हमें इससे नया उत्साह मिलता है और हम भी अपने जीवन को ठीक मोड़ दे सकते हैं।

हम कहते हैं कि निरन्तर राम नाम जपना चाहिए, परन्तु उनके जीवन पर हम दृष्टि नहीं डालते और न ही अपने जीवन को उनके प्रकाश में चेत हो कर देखते हैं। राम नाम जपते हुए भी हम में अपने जीवन को राम के जीवन के रंग में ढालने की इच्छा ही पैदा नहीं होती।

पूज्य माँ ने हमें सदा यही बताया कि राम का नाम लेना तभी सफल होता है यदि हम उनके गुणों को अपने जीवन में लाएँ। बहुत साल पहले मैंने जब पूज्य माँ के मुखारविन्द से सुना कि 'राम के जीवन को देखो और उनके एक एक गुण को अपने जीवन में धारण करने का प्रयत्न करो, यही सच्चा राम नाम है,' तो मुझे बहुत अचम्भा हुआ। बात तो उनकी ठीक थी और हृदय तक पहुँची भी परन्तु आज इतने सालों के पश्चात् यही कह सकती हूँ कि इस समझ को आज भी मैं पूर्णतया अपने जीवन में नहीं उतार सकी।

बार बार पूज्य माँ के मुखारविन्द से प्रवाहित ज्ञान सुनकर अभी मैं इतना ही जान पाई हूँ कि इन गुणों को हम प्रयत्न करने से प्राप्त नहीं कर सकते। यदि इन्हीं गुणों को देखते हुए राम से प्रेम हो जाये तो वह गुण जीवन में स्वतः ही आ जायेंगे। यह नियम ही है प्रेम का, कि हम वही करना चाहेंगे जो हमारे प्रेमास्पद को पसन्द है और हम वैसे ही बनते चले जायेंगे। प्रेमास्पद के गुण पाने के लिये फिर कोई प्रयत्न नहीं करना पड़ेगा, वह गुण स्वतः ही आन्तर में आते जायेंगे।

संसार और भगवान से प्रेम का अन्तर

संसार से प्रेम और भगवान से प्रेम में बड़ा अन्तर है। संसार में हम जिससे प्रेम करते हैं, उससे हम हर ख़ुशी अपने लिए चाहते हैं, अपने प्रेमास्पद से अपनी चाहनाओं की पूर्ति चाहते हैं। यदि हमें भगवान से प्रेम हो गया, फिर हम वही करेंगे जो भगवान को पसंद है, वही गुण अपने आन्तर में लायेंगे जो गुण भगवान के हैं। एक संसारी कहता है, 'भगवान! मेरे अवगुण चित्त न धरो'; भगवान को प्यार करने वाला भक्त या साधक भगवान से याचना करेगा, 'हे राम! मैं भी अपने में क्षमा का गुण धारण करना चाहती हूँ। जैसे तुम मुझे क्षमा करते हो वैसे ही मैं भी किसी के दोष चित्त में न धरूँ!'

भगवान तो सभी से प्रेम करते हैं, उनका प्रेम सबके लिये समान रूप से बहता है। भगवान की दिव्य विभूतियों राही ही हम यह देख सकते हैं। सूर्य अपनी रोशनी सब को सम रूप से देता है, वायु सबके लिये समान रूप से बहती है। जब मनुष्य के अपने आन्तर से सबके प्रति समरूप से गुण बहते हैं, वे दया, क्षमा, करुणा, प्रेम आदि के गुण ही दैवी कहलाते हैं।

यदि जीव को भगवान से प्रीत हो जाए तो उसे इन गुणों को अपने में लाने के लिये प्रयत्न नहीं करना पड़ता। यह गुण फिर उसके जीवन में स्वतः ही बहते हैं और इस बहाव से ही उसका चित्त शुद्ध लगता है। फिर वहाँ 'मेरे-तेरे' के भाव मिटने लगते हैं, राग-द्वेष दूर होने लगते हैं। यही तो आवरण हैं जो हमें भगवान से दूर रखते हैं।

यदि हमें भगवान से प्रीत हो जाए तो फिर निरन्तर राम ही मन में बसेंगे, फिर हमें निरन्तर राम के वाक् याद रहेंगे। भगवान कहते हैं, 'सब मुझ से ही उत्पन्न होते हैं और मैं सभी में हूँ।' फिर जो भी सामने आया, जो भी परिस्थिति मिली, उसमें मन चेत रहेगा कि यह भगवान का ही रूप है और यह परिस्थिति भगवान की ही भेजी हुई है। इस तरह भगवान का निरन्तर चिन्तन बना रहेगा। यदि इस प्रकार से राम नाम लिया जाए, तभी तो जीवन में, दिनचर्या में भी हम वैसा ही करेंगे जैसा राम का आदेश है। इसी प्रकार करते करते चित्त शुद्ध होने लगेगा। ज्यों ज्यों यह चित्त शुद्ध होता जायेगा, त्यों त्यों राम से योग होने लगेगा। यही उनका निरन्तर चिन्तन बन जायेगा।

ऐसा प्रेम तो भाग्य से ही किसी साधक को मिलता है हम जैसे साधारण जीवों को साधना पथ पर चलने के लिये पूज्य माँ ने हमें ओम् की उपासना की सहज विधि बताई है। उपनिषदों में ओम् के तीन पाद कहे हैं।

प्रथम पाद है ओम् का वैश्वानर रूप! वह कहते हैं कि सारे विश्व में ओम् ही व्याप्त है इसलिये यहीं से साधना शुरू करो। जब सारा विश्व ओम् की ही रचना है और ओम् का ही रूप है, तो हम इस वैश्वानर रूप की ही सेवा करते हुए शनैः शनैः आगे बढ़ने लगेंगे। भगवान के वैश्वानर रूप की सेवा से हमारे मन के राग और द्वेष मिटने लगेंगे। स्थूल में जग रूप ब्रह्म की सेवा करते करते, शनैः शनैः हम अपने मन को निरखते हुए ओम् के द्वितीय पाद- तैजस् तक पहुँचेंगे। वहाँ पर हमारे मन का संग सूक्ष्म अति सूक्ष्म रूप से दिखने लगेगा। तत्पश्चात् हम अपना संग इस स्थूल की बजाय राम चरण में बढ़ाते जायेंगे। यहाँ पर हमारे मन की हर प्रतिकार झंकार हमें अपने ही संग के दर्शन करायेगी और इस संग से उटा कर भगवान चरण में लगायेगी।

इस अभ्यास से जब हमारी बुद्धि बाह्य संसार से तनिक भी प्रभावित नहीं होगी तो आन्तर से प्रज्ञा प्रवाहित होने लगेगी। इस राही हमारा योग नित्य प्रति भगवान से बढ़ने लगेगा। ज्यों ज्यों राम से योग बढ़ता जायेगा, त्यों त्यों यह अहं मिटता जायेगा। एक दिन ऐसा आयेगा कि यह अहं राम में ही विलीन हो जायेगा। फिर यह जीवन राममय ही हो जायेगा। यही ओम् के तृतीय पाद की उपासना है।

आज हम इतना ही बड़ा सौभाग्य मानते हैं कि इस बात को कुछ कुछ समझ तो पाये हैं और इस में रुचि भी होने लगी है। अब तो कर जोड़ कर भगवान से यही प्रार्थना है कि जीवन में हर स्तर पर उनकी ही उपासना हो, तभी यह मनुष्य जन्म सफल हो पाये।❖

भक्ति और समर्पण की सुगंध

सुश्री सुधा बबूटा, परम पूज्य माँ के प्रारंभिक अनुयायिओं में से एक थीं। उन्हें परम पूज्य माँ से परिचित करवाया था उनकी मित्र सुश्री विष्णु प्रिया मेहता ने, जो डॉ. जे.के. मेहता की सुपुत्री थीं। डॉ. मेहता अपनी समृद्ध चिकित्सा प्रैक्टिस जालंधर में छोड़ कर सपरिवार अपने गुरु के पास रहने चले आये थे।

उस समय पूज्य माँ धारवाड़ में थे, जब सुधा बहन जी, जो उस समय राजनीतिक विज्ञान में पीएच.डी. की अभ्यर्थी थीं, परम पूज्य माँ को चित्र में देख कर उनके प्रति इतनी आकर्षित हुईं कि उन्होंने विष्णु बहन जी से अनुरोध किया कि वे उन्हें पूज्य माँ से मिलवा दें और वह पूज्य माँ से मिलने धारवाड़ जाने के लिये तैयार हो गईं।

परम पूज्य माँ ने उनके पत्र को देखते ही कहा, "तुम्हारी यह मित्र जो धारवाड़ आ रही है, अपने जीवन काल तक हमारे पास रहेगी।" मानो जैसे पूज्य माँ ने भविष्यवाणी कर दी हो। पूज्य माँ से मिलने के बाद सुधा बहन जी ने अपना पूर्ण जीवन अपने गुरु के चरणों में ही समर्पित करने का निश्चय किया।

सुधा बहन जी का उद्देश्य स्पष्ट था। वे आध्यात्मिकता की एक परिश्रमी साधिका थीं, जो सदैव शास्त्रीय सिद्धांतों को व्यवहार में ढालने से जुड़ी जटिलताओं पर पूज्य माँ से मन्दिर में अक्सर प्रश्न पूछने को तत्पर रहती थीं। हर साधक के जीवन की भाँति, आध्यात्मिक यात्रा के उतार-चढ़ाव उनके लिए भी

चुनौतीपूर्ण रहे। लेकिन पूज्य माँ के वात्सल्यपूर्ण प्रेम के आलिंगन में उनकी श्रद्धा और समर्पण निरंतर बढ़ता गया।

उन्होंने अर्पणा के कई विभागों में काम करने के साथ साथ अर्पणा के प्रकाशन विभाग में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वह 'अर्पणा पुष्पांजलि' के लिए नियमित लेखन कार्य करतीं और प्रकाशन हेतु विज्ञापन एकत्रित करने के लिए बिना झिझक अन्य शहरों की यात्रा को भी जातीं। उन्होंने कई वर्ष तक एक मज़बूत आधार स्तंभ की भांति संपादन, मुद्रण और अर्पणा प्रकाशनों के वितरण में भी सक्रिय भूमिका निभाई।

जैसे-जैसे उनकी उम्र बढ़ती गई, उनका स्वास्थ्य प्रभावित होने लगा। परंतु इससे उनके अर्पणा मंदिर में प्रतिदिन प्रातः 7 बजे और शाम 7 बजे सत्संग में उपस्थित होने की निष्ठा पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। पूज्य माँ ने उन्हें मंदिर की गतिविधियों का ध्यान रखने का दायित्व सौंपा हुआ था.. और उन्होंने इस उत्तरदायित्व को अपने स्वास्थ्य की कठिनाइयों के बावजूद अपने जीवन के अंत तक निभाया।

मंदिर ही उनका जीवन था और सत्संग वह अमृत था, जिससे वह स्वयं को पोषित करती थीं। अपने गुरु द्वारा सौंपे गए दायित्व के प्रति उनकी अटूट निष्ठा ही उनके जीवन समर्पण का प्रमाण था।

सुधा बहन जी परिवार के सभी सदस्यों से प्रेम करती थीं और उन सभी सदस्यों को याद करती थीं जो अपने कार्य हेतु दूर देशों या नगरों में चले गए थे। वे अक्सर स्नेहपूर्वक उन लोगों से गिला करती थीं जो उनसे मिले बिना ही अपने गंतव्य के लिए रवाना हो जाते थे.. इस सारे आग्रह के पीछे अक्सर उनका यही भाव रहता-

'तुम जल्दी जल्दी आया करो!'

अपने गुरु के प्रति उनका प्रेम और समर्पण इतना गहरा था कि लोगों की राय और प्रतिक्रिया उनके लिए महत्वहीन थीं.. उनके लिए तो केवल गुरु सेवा ही सर्वोपरि थी।

ईश्वर आपको सदगति दें, प्रिय सुधा बहन जी।

जैसे आप अपनी पारलौकिक यात्रा की ओर अग्रसर हो रही हैं, हम सब आपको आपके अपरिमित प्रेम और परम पूज्य माँ तथा उर्वशी के लिए आपकी अविरत सेवा के प्रति अपनी हृदयपूर्ण कृतज्ञता अर्पित करते हैं।❖

तनो वृक्ष पर संग संग,
द्वौ पक्षी रे रहते हैं..

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते।
तयोरन्य: पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्यो अभिचाकशीति।।

मुण्डकोपनिषद् - 3/1/1

अर्थात् - एक साथ रहने वाले तथा परस्पर सखा भाव रखने वाले दो पक्षी जीवात्मा और परमात्मा एक ही वृक्ष (शरीर) का आश्रय लेकर रहते हैं; उन दोनों में से एक तो उस वृक्ष के सुख-दु:ख रूप कर्मफलों का स्वाद ले-लेकर उपभोग करता है किन्तु दूसरा न खाता हुआ केवल देखता रहता है।

तत्व विस्तार:

तनो वृक्ष पर संग संग, द्वौ पक्षी रे रहते हैं।
साख्य भाव तो नित्य बहे, संग ही दोनों रहते हैं।।1।।

जीवात्म और परमात्म, नित्य संग ही रहते हैं।
हृदय घोंसले में कह लूँ, दोनों ही रे रहते हैं।।2।।

एक पक्षी तो वृक्ष फल, नित्य निरन्तर खाये है।
उदासीन दूजा पक्षी, निरपेक्ष देखे जाये है।।3।।

सुख दु:ख रूपी वृक्ष फल, सुख दु:ख रूप में खाये है।
कर्म बीज परिणाम फल, उपभोग करता जाये है।।4।।

दूजा द्रष्टा मात्र कहो, वह तो सब कुछ जाने है।
क्या क्योंकर किस पल हुआ, साक्षी रूप में जाने है।।5।।

जीवत्व भाव तन अपनाये, मन बुद्धि भी अपनाये।
अहम् संग मम भरा हुआ, तनो व्यवस्था अपनाये।।6।।

बीज कर्म के जो फूल, शिशु रूप अंकुर फूटे।
मनो मान्यता अहम् भरी, फल खाये जब वृक्ष भये।।7।।

संग वृक्ष सों हो गया, तद्रूप वृक्ष के हो गया।
रेखा में है रे दिया, परिणाम आप ही मान गया।।8।।

स्थूल एक यहाँ वृक्ष कहें, सूक्ष्म भोगी पक्षी कहें।
कारण द्रष्टा पक्षी कहें, या नित भोगी पक्षी कहें।।9।।

भोगी पक्षी मन सुनो, जीवत्व भाव को कहते हैं।
तन तद्रूप जो हो रहा, उसी संगी भाव को कहते हैं।।10।।

मन स्वभाव मनो ध्यान, आन्तर लोक को कहते हैं।
तैजस रजो गुणी मन को, भोगी पक्षी कहते हैं।।11।।

उत्पत्ति यह बाह्य रूप, वृक्ष रे तन को कहते हैं।
जगत रूपी क्षेत्र को, कह लो वृक्ष रे कहते हैं।।12।।

तम पूर्ण यह तमो रूप, पूर्ण जग को कहते हैं।
कर्म बीज जन्म दे है, स्पष्ट अब यह कहते हैं।।13।।

विराट रूप यहाँ विश्व रूप, कर्मन् बीज ही कारण है।
उत्पत्ति रे सम्पूर्ण, बीज ही करते धारण हैं।।14।।

पूर्ण जग रे जड़ ही है, रेखा का पसारा है।
वृक्ष रूपी काया का, प्रारब्ध ही आधारा है।।15।।

पात डाल को' वृक्ष भये, बीज रूप में निश्चित है।
कितना विशाल को' फूल लगे, सम्पूर्ण यह निश्चित है।।16।।

विभ्रान्त हुआ भोगी पक्षी, वृक्ष तद्रूप हो जाये।
कर्म फल वृक्ष रूप को', संग वहीं करता जाये।।17।।

सुख दु:ख रूपी फल लगे, अपनाना ही खाना है।
अपनाने से जान लो, वा तद्रूप हो जाना है।।18।।

फल में इतना ताब कहाँ, दु:ख सुख वह रे बन जाये।
जड़ जंगम में चेतनता है, प्रभावित इसको कर जाये।।19।।

मनो भाव यह जीव भाव, बाह्य लोक अपनाये है।
जड़ जंगम तन रेखा के, तद्रूप ही होता जाये है।।20।।

रागी द्वेषी आसक्ति भये, दु:खी सुखी हो जाता है।
उदासीन यह परम सत, निरपेक्ष ही देखे जाता है।।21।।

द्रष्टा पक्षी ही तो है, ईश्वरत्व भाव को कहते हैं।
यह सत्त्व भाव कर्माशय, लय अवस्था कहते हैं।।22।।

यह कारण तन सर्वज्ञता, दर्शन इसको कहते हैं।
प्रज्ञा समाधि द्युलोक, सब लोकों को कहते हैं।।23।।

कर्म बीज पूर्ण लिये, प्रदुर आप हैं कर रहे।
पूर्व कर्म अनुकूल ही, तन सामने धर रहे।।24।।

कब कहाँ रे को' फल प्रकटेगा, ईश्वर भाव यह सब जाने।
द्रष्टा पक्षी उदासीन, साक्षी रूप में सब जाने।।25।।

जीवत्व भाव रे कहते हैं, संस्कार झंकार है।
ईश्वर की छाया कह लो, विश्व का भंडार है।।26।।

ईश्वर मौन में रहता है, भाव रहित ही उसे कहो।
सर्वज्ञ है ईश्वर वह, सर्व स्थित भी उसे कहो।।27।।

'विश्व मात्र' रे जीव यह है, कर्म पात्र में रहता है।
मिथ्या पात्र में ही जानो, संग वह करता रहता है।।28।।

कारण बिन ओ जान लो, सूक्ष्म की सत्ता नहीं।
सूक्ष्म बिन यह स्थूल रूप, कदापि हो सकता नहीं।।29।।

कार्य कारण समुदाय, वृक्ष फल हैं लगे हुये।
अज्ञान के कारण इक पक्षी, फल सों संग रे है करे।।30।।

वृक्ष के तद्रूप होई, सुख दु:ख अपने माने है।
मिथ्यात्व में भरमाया वह, कर्ता निज को माने है।।31।।

अकर्ता अभोक्ता जीव सत्त्व है, जीव नहीं यह जाने है।
मन संग अपना करके, आरोपित गुण निज माने है।।32।।

बुद्धि के संग मिल करी, ज्ञान आचरण वह करता है।
श्रेय पथ का साधक बनी, वह अनुसरण रे करता है।।33।।

अज्ञान आवरण जो उठ जाये, आत्म रूप को जान ले।
संग मोह अज्ञान मिटे, परम तत्व वह जान ले।।34।।

कर्तृत्व भाव फिर नहीं रहे, कर्ता अहंकार मिटे।
एक में एक ही हो जाये, दूजा कहीं पे नहीं रहे।।35।।

साधक उसको कहते हैं, तन तद्रूपता छोड़ दे।
ईश्वर भाव वह मौन भाव, उससे तू नाता जोड़ दे।।36।।

रजोगुणी अरे जीव है, सत्त्व की ओर रे वह बढ़े।
विज्ञानमय भी छोड़ करी, प्रज्ञा में जा स्थित होये।।37।।

प्रज्ञा जागृत हो जाये, मौन ही वह हो जाये।
महा मौन में साधक रे, फिर जाये के खो जाये।।38।।

जीवत्व भाव वहाँ नहीं रहे, माया खेल सब मिट जाये।
रेखा बँधा तन तो रहे, अनुभवी मन तब मिट जाये।।39।।

जीवत्व भाव ही मिटना है, अहम् मिटाव ही मुक्ति है।
जड़ चित्त ग्रंथि कारण यह, मन मिटाव ही मुक्ति है।।40।।

राम राम बस राम कहो, गर नाम में ही तुम मग्न रहो।
ज्ञान स्वरूप रे हो जाओ, परम सत चिन्तन करो।।41।।

बार बार यही कहते हैं, बाह्य प्रज्ञता छोड़ दो।
आन्तर प्रज्ञ रे हो करी, द्रष्टा से नाता जोड़ दो।।42।।

हृदय गुहा में आ करी, मौन रूप में आ जाओ।
मनो आसना लगा करके, समाधि में समा जाओ।।43।।

सत्त्व स्वरूप रे परम रूप, अखण्ड का अनुभव हो जाये।
परम मिलन ही साधक रे, तब ही सम्भव हो जाये।।44।।

17-9-61

मन का मौन

"कुछ वर्ष पूर्व भगवान की कृपा से मुझे कुछ दिन अर्पणा में पूज्य माँ के चरणों में रहने का मौका मिला। मैंने अपने आन्तरिक संशय के निवारण अर्थ पूज्य माँ से प्रश्न किया। उसका उत्तर जैसा मैं समझी, वैसा ही प्रस्तुत करने का प्रयत्न कर रही हूँ।"

- श्रीमती प्रेम कालरा

प्रश्न - माँ! यह मन बहुत चंचल है इसको कैसे चुप कराया जाये? बाहर वाणी का मौन किस हद तक मदद करता है?

पूज्य माँ - देखना यह है कि आपका मन क्यों बोलता है? आप क्यों मौन होना चाहते हैं? क्या आपने कभी इस बारे में सोचा? मन तो केवल चाहता ही चाहता है- मुझे यह चाहिये मुझे वह चाहिये, परन्तु प्रश्न यह है कि वास्तव में इसको क्या चाहिये? पहली बात यह समझ लो, मौन आन्तर में होता है, बाहर नहीं। आपने अपने मन को मौन कराना है ताकि कहीं कोई प्रतिकार झंकार न हो। दुःख-सुख में, मान-अपमान में आप समत्व भाव में रहें, यह ही मौन है।

अब देखना यह है कि हम क्या करें जिससे मन मौन हो? यदि यह मन संसार में लिप्त रहेगा - जैसे बच्चों से अत्यधिक मोह, तरह तरह की वस्तुओं को पाने की चाहना इत्यादि, फिर आपका मन तो इधर उधर ही भागता रहेगा, आपकी चाहना बढ़ती ही रहेगी। इसको आप उदाहरण से समझे। आपने एक खम्भा पकड़ा हुआ है, अब आपने दूसरा खम्भा पकड़ना है जो दो गज़ की दूरी पर है। यदि पहला खम्भा छोड़ोगे तभी तो दूसरा पकड़ोगे।

आपने संसार में लिप्त नहीं होना, वहाँ आपने केवल अपने कर्त्तव्य का पालन करना है। यदि आप वहाँ लिप्त हो जायेंगे तो मोह में फँसते चले जायेंगे। मोह तो एक कीचड़ है जिसमें धंसता ही चला जाता है जीव! अगर कीचड़ में पाँव फंस गया तो उसमें पाँव निकालते समय छींटे तो अवश्य पड़ेंगे। आप कीचड़ की तरफ जाते ही क्यों हैं? यदि आप वास्तव में मौन होना चाहते हैं, इसके लिये विपरीत अभ्यास करना पड़ेगा! इसकी विधि जीवन में बहुत सहज है:

1. निष्काम भाव से दूसरों के काज करे।
2. दूसरों के लिये सोचें, अपने लिये नहीं। यदि दूसरों के हित के लिये सोचेंगे तो दूसरों के कार्य भी करेंगे।
3. दूसरों के दुःख के तद्रूप हो कर उस दुःख को अपना समझते हुए, उसके निवारण हेतु प्रयत्न करें।
4. भगवान से प्रीत करें, भगवान से प्रेम करें।
5. यदि भगवान में श्रद्धा है तो आप शास्त्र की कथनी को जीवन में मानेंगे। शास्त्र को केवल बातों में ही नहीं मानना होता, वह तो कोरा शब्द ज्ञान है। उस शब्द ज्ञान को कर्मों में उतारना है। हर क्षण तेरा अन्तिम क्षण है, इसे याद रख कर जो करना है, अभी इसी पल कर लें।
6. आपको अपने मन में प्रभु के चरण धारण करने हैं, यही आपकी भक्ति है।

भक्ति के साथ श्रद्धा भी अनिवार्य है। जब आप किसी सद्गुरु को, भगवान को, अवतारी पुरुष को, अथवा ब्रह्म को प्रेम करते हैं, तो उनके गुण भी आप जीवन में अवश्य अपनाना चाहेंगे। फिर आपका ध्यान उस तरफ लग जायेगा। साधक कहता है, 'हे भगवान! मैं अपने सद्गुरु का कोई गुण तो अपना लूँ', कोई बात तो मान लूँ! यही श्रद्धा का आरम्भ होता है।

आपकी तो प्रीत प्रभु चरणों से हो गई, लेकिन उन चरणों में श्रद्धा भी तो होनी चाहिए। जब आपका चित्त पूर्णतया भगवान के चरणों में टिक गया, वहीं आपका ध्यान लग गया। जब ध्यान उधर लग जाता है, तो कोई अन्य चाहना रहती ही नहीं। मन यही कहा जाता है, 'मैंने तुझे ही पाना है, तेरा भाणा मीटा लागे!' फिर कहाँ मान-अपमान? फिर दुःख-सुख उस चित्त में कैसे आयेंगे? वहाँ तो प्रभु का वास है, यही प्रेमास्पद में श्रद्धा है।

जब आपका चित्त टिक गया तो आप मौन हो गये। यह तभी सम्भव है जब आप में अपने प्रभु, सद्गुरु के प्रति अटूट श्रद्धा हो। इसलिये मन में श्रद्धा को बढ़ाइये! जितनी जितनी भगवान में, शास्त्र में श्रद्धा होगी, मन मौन होता जायेगा।❖

आपके प्रेम की रोशनाई के दीप जले तो अंधेरे कैसे टिकते?

श्रीमती पम्मी महता

हे श्री हरि, जगद्‌जननी माँ प्रभु जी, आपने अपनी माया का रहस्य तो कभी बताया ही नहीं। मायापति, उस माया में हमने न जाने कितने जन्म.. न जाने कितने युग बिता दिये.. जिसके कारण यह 'मैं' तन-मन के उसी चक्र में पड़ी रही.. सुख-दुःख के व्यूह में उलझी हुई जीवन जीती रही!

मन के किसी कोने में शायद यह जिज्ञासा अवश्य रही होगी कि भ्रम का यह पर्दा कभी उठे.. परंतु वह चाहत कितनी क्षीण रही होगी.. शायद इसी वजह से आपको बुलाकर भी नहीं बुला पाई। हृदय में तड़प उठी भी होगी, पर उसे सहलाया ही नहीं। प्रेम की वह अग्नि भी शायद उतनी प्रज्वलित न हुई होगी जिसमें 'मैं' ही भस्म हो जाती।

धन्य हैं आप, प्रभु माँ, जिन्होंने हमारी प्रतीक्षा में कितने युग बिता दिये.. बस इसी आशा में कि कभी हम सच्चे, सुच्चे और व्याकुल हृदय से आपको माँग लेंगे, आपको पा लेंगे। निश्चित ही आपने ऐसा ही चाहा होगा, तभी तो वही दिया, और निरंतर देते चले आ रहे हैं।

हे श्रीनाथ, आप ही ने जीवन को वह सुंदर मोड़ दिया कि चारों ओर बस आप ही आप दिखाई देने लगे। हृदय में ऐसी हूक उठी कि आपका नाम अपने आप ही फूट पड़ा। यह किसकी करुण कृपा का दिव्य प्रसाद है? कैसे आप सुहृदय बनकर मेरे हृदय में उतर आये और हृदय वीणा पर अपने ही स्वर साधने लगे!

पुरानी तारें टूटती चली गईं और जीवन को आपने ही नया रूप दे दिया। जगद्‌जननी माँ का यह स्नेहसिक्त प्रेम मेरे भीतर इतना भरता गया कि मैं अपनी 'मैं' से कब दूर होती गई, पता ही नहीं चला। आपकी करुणा का यह प्रसाद मुझे आपसे ही बाँधता चला गया, और मुझे आपका मुरीद बना गया।

आपके प्रेम की रोशनाई के दीप जले तो अंधेरे कैसे टिकते?

आप मायापति ने 'मैं' के दर्शन भी कराये और साथ-साथ अपनी रहगुज़र पर चलने का संकेत भी दिया। जीवन की हक़ीक़त जितनी खुलती गई, मन उतना ही आपसे जुड़ता चला गया। फिर पीछे मुड़कर देखने की चाह ही नहीं रही। आपके विलक्षण दर्शन में मानो मेरा स्वयं का अस्तित्व खोने लगा।

माँ, यह सब आपकी ही अप्रतिम करुण कृपा थी, जिसने मुझे ठहरने का कोई स्थान ही नहीं दिया। आपने मुझे मुझसे मिलाया, 'मैं' के आवरण से मुक्त हो पाऊँ.. इसके लिये प्रयासरत रहे। आपके असीम अनुग्रह और प्रेम से मेरा हृदय सराबोर होता रहा।

यह कोई भूली-बिसरी यादें नहीं..

यह मेरे जीवन का परम सत्य है.. जो आपने प्रसाद रूप में मेरे हृदय दामन में भरा है। मैं निरंतर आपके शरणापन्न रहती हूँ और प्रार्थना करती हूँ कि पूरी तरह आपके प्रति अर्पित और समर्पित हो जाऊँ.. सदा-सदा के लिए! आप ही में विलीन होने का सौभाग्य प्राप्त करूँ।

जानती हूँ माँ, 'आप ही यहाँ तक लेकर आए हैं, और आगे भी आप ही ले जाएँगे! आपकी इस कनीज़ को अपनी पूर्णता में विलीन कर लीजिए।' आप जैसे सद्गुरु मिल जाएँ तो जीवन माया के आवरणों से मुक्त होने लगता है। आपकी दिव्य दृष्टि पाकर ही कोई आपके दर्शन कर पाता है.. न इसमें कोई संदेह है, न ही दो राय!

आप ही समभाव, आप ही समप्रेम

आप ही वह माँ, जिसकी 'मैं' नहीं होती!

आप ही वह दिव्य प्रवाह, जो गंगा की तरह निर्मल और सबके लिए समान बहता है।

जिसे आप चुनते हैं, वही आपके दर्शन पाता है।

जिसे आप पकड़ कर चलाते हैं, वही मार्ग पर चल पाता है।

आप ही कृपा देकर श्रद्धा व भक्ति का पात्र बनाते हैं, और माटीवत् जीने का प्रसाद देते हैं। तभी तो अब हर क़दम पर बस आप ही आप! आंतर भी आप, बाहर भी आप.. मेरी सभी चाहनाओं, मेरे भावों और विचारों को आपने ऐसे समेट लिया है कि अब यह सब आप पर ही केन्द्रित हो गये हैं। आप ही वह धुरी हैं जिसके इर्द-गिर्द ही अब यह जीवन चलता चला जा रहा है.. क्योंकि आपने पूर्णतया इसे जगा जो दिया।

सर्वत्र आप ही आप हैं.. जहाँ पहले आपको मंदिर की सीमाओं में बाँध रखा था, वहीं आपने अपने असीम विस्तार में यह प्रकट कर दिया, 'सब मेरे से हैं, सब में 'मैं' हूँ, और सब मेरे ही रूप हैं!'

इसलिए ‘मैं’ की कहीं कोई जगह ही नहीं।

हे हरि, इस परम सत्य की कितनी अद्भुत यथार्थता है! आपको बारम्बार नमन है। क़दम-दर-क़दम आप स्वयं को प्रकट करते चले जाते हैं.. रफ़्ता-रफ़्ता आपके पीछे चलते हुए आपने ही इस अनुभव का प्रसाद दिया है।

साधना भी आप, साध्य भी आप, और साधन भी आप ही हैं।

सभी आप ही हैं- हे श्री हरि माँ प्रभु जी। इस सत्य और यथार्थता की जागृति के बाद आप किस क़दर चिंता मुक्त कर देते हैं.. सुख-दुःख में समभाव कैसे उतर आता है.. यह अनुभव अत्यंत अद्भुत और आश्चर्यचकित कर देने वाला है।

आपका जीवन जीव-जगत के लिए वरदान है। ऐसे भव्य, सुंदर और दिव्य दर्शन का परम सौभाग्य आप श्री हरि माँ से ही पाया है। सचमुच अनमोल प्यार मिला.. बेमोल व अद्वितीय। धन्यवाद करने का सामर्थ्य भी कहाँ है.. बस मन ही मन आपके श्री चरणों में नत होती रहती हूँ, लोटती रहती हूँ। आप माँ, कैसे इस हृदय को दृष्टा-भाव में लाकर करुणा बरसाते चले गए.. यह ‘मैं’ तो केवल सम्बोधन मात्र थी, पर इसे अपनाकर मैंने ही मोह का अपराध किया। ‘मैं मेरा’ को पकड़ लिया, और मोह के जाल में उलझती चली गई।

याद आता है, आपने कहा था, “तू मोह की मारी है, प्यार तुझमें है ही नहीं।” पहले बड़ा आश्चर्य हुआ, पर जब आपने प्रेम का सत्य बताया.. “प्यार निःस्वार्थ होता है। प्यार कुछ माँगता नहीं। प्यार अपने समेत अपना सर्वस्व देता जाता है।”

ऐसी अद्भुत व्याख्या प्रेम की पहले कभी सुनी ही नहीं थी। उस प्रेम को जीने की कैसी तीव्र तमन्ना जग पड़ी! आपकी वाणी का यह सत्य मेरे अंतर्मन की धरोहर बन गया। आपका यह दिव्य प्रसाद इतना अद्वितीय और अनुपम है कि इसे पाकर मैं धन्य होती चली गई।

आपके हर क़दम को मैंने अपने हृदय के भीतर से गुज़रते देखा- इसी कारण ये क़दम मेरे भीतर स्थायी होते चले गए। सच माँ, यह ‘भगवद् कृपा’ ही है, यह एहसास मन को पूर्णतया नम कर देता है। हृदय छलक उठता है।

आप माँ प्रभु जी को जीवन में, और सर्वत्र साक्षात् अनुभव करती हूँ.. आप ही को महसूस करके मन आनन्दित हो उठता है। वास्तव में जीना तो इसी को कहते हैं।

हे श्री हरि जगद्जननी मईय्या, आपकी महिमा अपरम्पार है। ईश्वर करे, आप सदा मेरे भीतर सलामत रहें और यह ‘मैं’ आपके ही भीतर विलीन हो जाए। इसी मंगलमयी भावना से कुछ क्षणों के लिए रुख़सत होती हूँ.. कामना करती हूँ कि सदा-सदा के लिए मैं आप ही से सनाथ रहूँ। हरि ॐ

परम पूज्य माँ

अर्पणा समाचार पत्र

अर्पणा ट्रस्ट, मधुबन,
करनाल, हरियाणा
दिसम्बर 2025

अर्पणा आश्रम

ज्ञान की दिव्य धारा

शुद्ध ज्ञान का प्रवाह, जिसे 'उर्वशी' नाम दिया गया, पूज्य माँ की परम सत्ता में अखंड स्थिति और गहन भक्ति से आरम्भ हुआ। यह मानव जाति को प्रदान किया गया एक दिव्य उपहार है।

अर्पणा ट्रस्ट की स्थापना इस दिव्य आध्यात्मिक ज्ञान के प्रवाह को संरक्षित और प्रसारित करने के लिए की गई थी, जो मनुष्य को प्रेम, आनंद, करुणा आदि जैसे शाश्वत मूल्यों को आत्मसात करने की ओर ले जाता है।

'उर्वशी दिवस'

2 अक्तूबर को उर्वशी दिवस, अर्पणा परिवार और समुदाय के लिए एक उल्लासपूर्ण उत्सव था। 'उर्वशी ललित कला अकादमी' के सदस्यों के गायन ने पूज्य माँ के उर्वशी भजनों से वातावरण को दिव्यता से भर दिया।

'उर्वशी दिवस' छोटे माँ का जन्मदिन भी है! उन्हीं के परिश्रमी और सतत् प्रयासों के कारण आज हमारे पास वह विशाल वेदान्तिक ज्ञान संग्रह उपलब्ध है, जो परम पूज्य माँ के मुखारविन्द से बहा।

अर्पणा परिवार ने एक प्रिय सदस्य को विदाई दी

सुश्री सुधा बबूटा, जो 1965 से अर्पणा परिवार का एक अभिन्न अंग थीं, ने 1 दिसंबर को अपने पार्थिव शरीर का त्याग किया और परम में जा विलीन हो गईं।

परम पूज्य माँ से उनकी पहली भेंट दक्षिण भारत स्थित धारवाड़ में हुई। पूज्य माँ के असाधारण ज्ञान से अभिभूत होकर उन्होंने अपनी पीएच.डी. छोड़कर पूज्य माँ के साथ ही रहने का निर्णय लिया।

'उर्वशी' और अर्पणा के प्रति उनके सेवाभाव एवं पूज्य माँ से दिव्य ज्ञान को उद्भासित करने वाले उनके प्रश्नों के लिए हम उनके प्रति हृदय से कृतज्ञ हैं। परम पूज्य माँ के प्रति उनका समर्पण सदैव स्मरणीय रहेगा।

अर्पणा अस्पताल

अर्पणा अस्पताल में खुले 3 नए विभाग!

अगस्त 2025 में अर्पणा अस्पताल ने तीन महत्वपूर्ण चिकित्सा विभागों का शुभारंभ किया, जिससे समाज के लिये उन्नत, सुलभ और जीवनरक्षक स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान करने की क्षमता और भी बढ़ गई है।

1. **ऑन्कोलॉजी विभाग:** नेतृत्व - डॉ. गौरव पॉपली, MDS, FHNSO यह विभाग कैंसर रोगियों को विशिष्ट और करुणापूर्ण चिकित्सा प्रदान करता है- विशेषकर उन मरीज़ों को जो आर्थिक कारणों से उपचार से वंचित रह जाते हैं।

जयपाल, 65 वर्षीय मजदूर, पिछले नौ महीने से गले की गंभीर समस्या से पीड़ित था, परंतु वित्तीय कठिनाइयों के कारण उपचार नहीं करा पा रहा था।

अर्पणा के ऑन्कोलॉजी विभाग ने उसे रियायती कैंसर उपचार प्रदान किया और 30 सितंबर को जीवनरक्षक सर्जरी की। अब वह स्वस्थ है और नया जीवन आरम्भ कर रहा है।

2. **आई बैंक (नेत्रकोश)** यह केंद्र, कॉर्निया एकत्रित करना, उन्हें सुरक्षित रखना और प्रत्यारोपण हेतु उपलब्ध कराना इत्यादि सुनिश्चित करता है।

वंशिका, 6 वर्ष की बच्ची, जन्म से ही दृष्टिहीन थी। अर्पणा आई बैंक से उपलब्ध कॉर्निया से 12 नवंबर 2025 को उसकी सर्जरी की गई।

13 नवंबर को जब वह अस्पताल लौटी- तो वह पहली बार अपनी आँखों से दुनिया देख पा रही थी। उसकी खुशी अवर्णनीय थी- उसके लिये वह क्षण सचमुच जीवन परिवर्तक था।

3. कार्डियोथोरेसिक और हृदय रोग विभाग यह नया विभाग आधुनिक उपकरणों और सुविधाओं से सुसज्जित है, जिसमें हृदय रोगों की जाँच और उपचार हेतु इंटरवेंशनल तथा नॉन-इंटरवेंशनल दोनों प्रकार की सेवाएँ उपलब्ध हैं। विभागाध्यक्ष हैं- डॉ. विक्रम काला, MBBS, MD (Ex-PGI). अर्पणा अस्पताल ही दिल्ली और चंडीगढ़ के बीच एकमात्र ऐसा अस्पताल है जहाँ अत्याधुनिक कैथ लैब उपलब्ध है।

जगदीश, 75 वर्षीय सेवानिवृत्त कर्मचारी, 13 नवंबर को अचानक हार्ट अटैक के कारण अर्पणा अस्पताल में लाया गया।

कैथ लैब में आपातकालीन स्टेंट प्रक्रिया की गई, जिससे उसकी जान बच गई।

कृतज्ञता व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा, "अर्पणा अस्पताल जैसे हर अस्पताल में चिकित्सक, स्टाफ और सेवाएँ उपलब्ध होनी चाहिएं।"

अर्पणा अस्पताल का विशेष दिवस

अर्पणा अस्पताल की वर्षगांठ

अर्पणा में कर्मचारियों को उनकी समर्पित सेवाओं के लिए सर्टिफिकेट दिए गए।

2 अक्तूबर को अर्पणा के ट्रस्टी, कंसल्टेंट्, सभी डॉक्टरों, प्रबंधन और स्टाफ के साथ अर्पणा अस्पताल की 45वीं वर्षगांठ हर्षोल्लास के साथ मनाई गई। इस अवसर पर अर्पणा के प्रति 25 वर्षों की समर्पित सेवा के लिए तीन कर्मचारियों को सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त सभी कनिष्ठ कर्मचारियों को भी विशेष प्रशंसा पुरस्कार और प्रमाणपत्र प्रदान किए गए।

अर्पणा अस्पताल की आधार स्तम्भ एवं आजीवन सेवा भाव की प्रतीक डॉ. इला आनंद ने उन कर्मचारियों को सम्मान प्रमाणपत्र प्रदान किए जिन्होंने अर्पणा में 25 वर्षों की सेवा पूर्ण की है।

विश्व हृदय दिवस

29 सितंबर को अर्पणा अस्पताल ने हृदय रोगों के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया।

अर्पणा के हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. विक्रम काला ने सरपंचों, आगंतुक चिकित्सकों, कंसल्टेंट्स और स्टाफ के साथ एक जागरूकता बैठक में हृदय को स्वस्थ रखने के महत्वपूर्ण उपाय साझा किए।

बिरेंदर सिंह कॉलेज और RPIIT कॉलेज ऑफ नर्सिंग, जींद के प्रशिक्षु छात्र भी इस अवसर पर सम्मिलित हुए। छात्रों ने CPR पर एक नाटक प्रस्तुत किया, और एक क्विज़ प्रतियोगिता भी आयोजित की गई, जिसमें मेडिकल ऑफिसर्ज़, नर्सिंग स्टाफ तथा नर्सिंग छात्रों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

सभी प्रतिभागियों को भागीदारी प्रमाणपत्र प्रदान किए गए।

बाल दिवस

14 नवंबर को अर्पणा में बाल दिवस आनंदपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर बच्चों के लिए फ्री OPD, मनोरंजक खेल, गतिविधियाँ और सभी छोटे बच्चों के लिए चॉकलेट इत्यादि की व्यवस्था की गई। बच्चों ने अत्यंत उत्साह और आनंद से इन सब में भाग लिया।

इस दौरान बाल रोग विशेषज्ञ डॉ. संगीता चौधरी ने बच्चों की जाँच भी की।

अर्पणा अस्पताल को सहयोग प्रदान करने के लिए श्री सुरेश मोतीराम शिवदसानी (सल्तनत ऑफ ओमान) यूएसए के उदार सहयोगियों: श्री अनुपम सचदेवा साधना एम और त्रिवेणी एन. उपाध्याय फैमिली फाउंडेशन इंक. आईडीआरएफ का हार्दिक आभार!

दिल्ली के कार्यक्रम

व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रमाणपत्र वितरण

1. श्रीमती मीता जैन ने छह महीने के सिलाई प्रशिक्षण पाठ्यक्रम पूरा करने वाली 25 प्रशिक्षार्थियों को प्रमाणपत्र वितरित किए।
2. श्रीमती सुषमा सेठ ने 21 प्रशिक्षार्थियों को ब्यूटी कल्चर कोर्स सफलतापूर्वक पूर्ण करने पर प्रमाणपत्र प्रदान किए।
3. श्रीमती बानी राजगढ़िया ने प्रतिष्ठित तीन महीने के CCMO-NIIT कोर्स पूरा करने वाली 63 प्रशिक्षार्थियों को प्रमाणपत्र प्रदान किए।

ब्यूटी कल्चर प्रमाणपत्र प्राप्त करने वाली प्रशिक्षार्थियों के साथ श्रीमती सुषमा सेठ!

बाटा इंडिया लिमिटेड द्वारा आयोजित वॉकथॉन में सहभागिता

25 सितंबर को, तीन छात्र- सौरव और प्रणव (कक्षा 9) तथा अरुण (कक्षा 11) - अपने अंग्रेजी के शिक्षक श्री राहुल के साथ गुरुग्राम में बाटा इंडिया लिमिटेड द्वारा आयोजित वॉकथॉन में सम्मिलित हुए।

छात्र इस कार्यक्रम में भाग लेकर अत्यंत उत्साहित थे। उन्होंने सफलतापूर्वक 5 किलोमीटर की दूरी पूरी की और पदक प्राप्त किए।

यह आयोजन बालिकाओं और वंचित बच्चों की शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु आयोजित किया गया था। बाटा इंडिया लिमिटेड ने इस मिशन से जुड़े सभी एनजीओ को आमंत्रित किया था।

दीवाली उत्सव

- 9 से 12 अक्तूबर तक आयोजित अर्पणा की वार्षिक बिक्री में, मोलरबंद केंद्र के विद्यार्थियों द्वारा बनाए गए सुंदर हस्तनिर्मित वस्तुओं का प्रदर्शन किया गया।
- 13 अक्तूबर को अवीवा लाइफ इंश्योरेंस के मुख्यालय में आयोजित दीवाली बिक्री में विद्यार्थियों द्वारा बनाए गए दीये और हस्तकला वस्तुओं को प्रदर्शित किया गया। अवीवा के नेतृत्व दल ने उनके कार्य की प्रशंसा की और छात्राओं को प्रोत्साहन देते हुए उन्हें कॉर्पोरेट जगत का अनुभव कराया।
- 17 अक्तूबर को अर्पणा एजुकेशन सेंटर में दीवाली हर्षोल्लास के साथ मनाई गई, जिसमें सजावट, रंगोली, आरती, संगीत और सभी के लिए उत्सव भोज भी था।

अर्पणा के वसंत विहार सेंटर में बाल दिवस

वसंत विहार के ज्ञान आरंभ ट्यूशन कार्यक्रम में 14 नवंबर को बाल दिवस बहुत उत्साहपूर्वक मनाया गया।

- कक्षा 1 से 5 तक के बच्चों ने रोचक खेल प्रतियोगिताओं का आनंद लिया और उन्हें स्वादिष्ट विशेष भोजन परोसा गया।
- कक्षा 6 से 12 के छात्रों को नेहरू तारामंडल (Nehru Planetarium) की शैक्षिक एवं मनोरंजक शैक्षणिक यात्रा पर ले जाया गया।

18 नवंबर को आयोजित एक समारोह में 20 से अधिक छात्रों को प्रोत्साहन हेतु छात्रवृत्तियाँ प्रदान की गईं।

मोलरबंद में शिक्षक दिवस पर हर्ष और उल्लास

5 सितंबर 2025 को मोलरबंद में शिक्षक दिवस अत्यंत हर्ष और रचनात्मकता के साथ मनाया गया। कई छात्रों ने शिक्षकों का रूप धारण किया और कक्षाएँ संचालित कीं। कार्यक्रम में भाषण, कविताएँ, गीत और भावनात्मक अभिव्यक्ति शामिल थीं।

विशेष सम्मान के रूप में श्रीमती अग्रवाल ने सभी शिक्षकों को आभार उपहार भेंट किए।

श्रीमती सुषमा अग्रवाल द्वारा दीप प्रज्वलन

अमन पाल - अर्पणा के छात्र से राष्ट्रीय खिलाड़ी तक का सफर

अमन अपने परिवार के साथ गौतमपुरी में रहता है। पाँचवीं कक्षा में ही उनके पिता का निधन हो गया, जिसके बाद उनकी माता जी, जो हाउसकीपिंग में कार्यरत हैं, ने परिवार की ज़िम्मेदारी संभाली।

अमन ने पाँचवीं कक्षा में अर्पणा से जुड़कर शिक्षा प्राप्त की। अर्पणा के शिक्षकों ने उन्हें निरंतर प्रोत्साहित किया। खो-खो के प्रति गहरी रुचि के साथ उन्होंने विद्यालय स्तर पर प्रतियोगिताओं में भाग लिया और साथ ही नृत्य व नाटक में भी सक्रिय रहे। 10वीं कक्षा में उन्होंने अपना पहला जूनियर नेशनल चैंपियनशिप खेला। इसके बाद उन्होंने दिल्ली का प्रतिनिधित्व नेशनल गेम्स और ‘खेलो इंडिया’ में किया। 11वीं में ह्यूमैनिटीज़ विषय चुनते हुए वे फिर से गुजरात में आयोजित नेशनल गेम्स के लिए चयनित हुए। वे दो बार ‘खेलो इंडिया’ और कई बार राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में भाग ले चुके हैं।

2023 में, अमन ने गर्वपूर्वक भारत का प्रतिनिधित्व मलेशिया में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय खो-खो प्रतियोगिता में किया। आज, अमन दिल्ली विश्वविद्यालय के रामलाल कॉलेज में बी.ए. कर रहे हैं और उन्हें CISF में स्पोर्ट्स कोटा के अंतर्गत हेड कांस्टेबल के रूप में चयनित किया गया है।

अर्पणा शिक्षा कार्यक्रमों के लिए केयरिंग हैंड फॉर चिल्ड्रन (यूएसए) एस्सेल सोशल वेलफेयर फाउंडेशन (नई दिल्ली) अवीवा लाइफ इंश्योरेंस (गुरुग्राम) का हार्दिक धन्यवाद करता है!

हरियाणा ग्रामीण विकास

अर्पणा स्वयं सहायता समूह (SHGs)

108 गाँवों में 1,081 सेल्फ हेल्प ग्रुप्स की 15,284 महिलाएं

1. **संचार** प्रति माह 20,000 संदेश 1,077 स्वयं सहायता समूहों के बीच साझा किए गए।
2. **प्रशिक्षकों का 3-दिवसीय प्रशिक्षण**
   38 प्रशिक्षकों को स्वयं सहायता समूह की योजना, उपस्थिति, समय सारिणी, रजिस्टर प्रविष्टियाँ और ज़ूम लिंक प्रबंधन को सुदृढ़ बनाने हेतु प्रशिक्षित किया गया।
3. **जलजनित रोग नियंत्रण** स्वयं सहायता समूहों ने निम्न कार्यों के माध्यम से महत्वपूर्ण योगदान दिया:
   a. 1,054 समूहों ने रिसावों की मरम्मत करवाकर जल संरक्षण और क्लोरीनेशन सुनिश्चित किया।
   b. 33 मरम्मत प्रस्ताव (resolutions) जमा किए गए और 610 पानी बर्बादी से जुड़े मुद्दों का समाधान किया गया।
4. **मच्छरजनित रोग नियंत्रण**
   a. 1,058 स्वयं सहायता समूहों ने जागरूकता अभियान चलाया।
   b. स्वयं सहायता समूहों द्वारा बुखार के मामलों की निगरानी में: 1,484 मामले पहचाने गए 773 परीक्षण किए गए 37 मामलों की पुष्टि हुई।
   c. 40 समूहों ने बीमारी रोकथाम हेतु गाँव में स्प्रे करवाने के लिए प्रस्ताव प्रस्तुत किए।
5. परिवारों के लिए बेहतर पोषण 105 गाँवों में 8,307 महिलाओं द्वारा 8,310 किचन गार्डन तैयार किए गए।

स्वयं सहायता समूह की महिलाएँ
गाँव में जमा पानी की पहचान करती हुई

ऑर्बिस एवं अर्पणा द्वारा पर्यावरण पायलट प्रोजेक्ट- 3 गाँवों में

ऑर्बिस ने अर्पणा के साथ मिलकर तीन गाँवों- अब्दुल्लापुर, चांदीपुर और पीर बड़ोली में कचरा पृथक्करण और स्वच्छ, कचरा-मुक्त पर्यावरण को बढ़ावा देने के लिए पायलट परियोजना की शुरुआत की।

725 महिलाओं ने सक्रिय भागीदारी की:

- स्वच्छता समितियों का गठन
- सफाई अभियान आयोजित करना
- कचरा पृथक्करण हेतु कपड़े के बैग सिलकर वितरित करना

अर्पणा, हरियाणा में अपने डेवलपमेंट प्रोग्रामों के लिए ऑर्बिस फाइनेंशियल कॉर्प लिमिटेड (गुरुग्राम), बैज नाथ भंडारी पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट, श्रीमती सुषमा लाल, और श्री रवींद्र बहल (सभी नई दिल्ली से) से मिले आर्थिक सहायता के लिए बहुत आभारी हैं।

हिमाचल प्रदेश

अर्पणा के बकरोटा केन्द्र में मुफ्त चिकित्सा शिविर

अर्पणा हेल्थ केयर एवं डायग्नोस्टिक सेंटर, बकरोटा, डलहौजी ने दो चिकित्सा शिविर आयोजित किए:

1. 25 से 30 अगस्त तक पाँच दिवसीय चिकित्सा शिविर यह शिविर परम पूज्य माँ की वंचित (underserved) पहाड़ी लोगों के प्रति आजीवन सेवा और समर्पण की स्मृति में आयोजित किया गया। इस शिविर में 351 मरीज़ों (जिनमें 80 वरिष्ठ नागरिक थे) की जाँच, निदान और उपचार किया गया।
2. 28 सितंबर को अर्पणा केंद्र, गजनोई में शिविर का आयोजन किया गया जिससे 119 मरीज़ लाभान्वित हुए।

भूस्खलन, बाढ़ और भारी बारिश से प्रभावित परिवारों के लिए राहत

अगस्त 2025 में हिमाचल प्रदेश में हुई भारी वर्षा से अर्पणा परियोजना क्षेत्र में भारी नुकसान हुआ, जिसमें घरों का ढहना, मिट्टी का कटाव, पानी से भरे खेत और फसलों का नुकसान इत्यादि शामिल थे। प्रभावित परिवारों की पहचान की गई और एक राहत योजना बनाई गई। स्वयंसेवकों ने घर-घर जाकर जरूरतों का आकलन किया और सही वितरण सुनिश्चित किया।

22 अक्तूबर को अर्पणा ने राहत सामग्री वितरित की, जिसमें शामिल थे: तिरपाल, कुल्हाड़ियाँ, फावड़े, निर्माण कार्य हेतु तसले। यह सामग्री 16 परिवारों को दी गई जो भारी वर्षा और भूस्खलन से प्रभावित हुए थे। ये परिवार जटकारी पंचायत के 9 दूरस्थ गाँवों में स्थित थे।

अर्पणा, इन हिमाचल कार्यक्रमों के लिए बैज नाथ भंडारी पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट और श्रीमती मोहिनी नून (नई दिल्ली) से प्राप्त समर्थन के लिए हार्दिक आभारी है।

दूरस्थ गाँवों में कृषि टैंक और सिंचाई प्रणाली

6 किसान समूहों के सदस्य जटकारी क्षेत्र के 4 गाँवों में चार टैंक और सिंचाई प्रणाली का निर्माण कर रहे हैं।

एक तकनीकी विशेषज्ञ ने स्थल का निरीक्षण कर आवश्यक सामग्री की सूची बनाई।

अर्पणा और ऑर्बिस फाइनेंस प्राइवेट लिमिटेड के सहयोग से चारों सिंचाई परियोजनाओं पर नवंबर में एक साथ कार्य प्रारंभ हुआ- ताकि दिसंबर की बर्फबारी से पहले उसे पूरा किया जा सके।

अर्पणा इन दूरस्थ गाँवों में कृषि टैंक और सिंचाई व्यवस्था हेतु ऑर्बिस फाइनेंस प्राइवेट लिमिटेड के समर्थन के लिए हृदय से आभार व्यक्त करता है।

अर्पणा हैंडीक्राफ्ट्स दिवाली सेल - संपूर्ण लाभांश चैरिटी के लिए!

9-12 अक्तूबर को, अर्पणा हैंडीक्राफ्ट्स प्रदर्शनी E-22, डिफेंस कॉलोनी में आयोजित की गई, जिसमें परिवार, मित्र और शुभचिंतक रचनात्मकता और आनंद से भरे इस आयोजन में सम्मिलित हुए।

घर की सजावट के लिए उपयोगी लिनेन, बच्चों के कपड़े और नाइटवियर प्रदर्शित किए गए - जिन्हें हरियाणा की ग्रामीण महिलाओं ने अत्यंत सुंदर कढ़ाई से सजाया था, ताकि वे अपने परिवारों का आर्थिक समर्थन कर सकें।

अर्पणा की आध्यात्मिक पुस्तकें - अर्थात् परम पूज्य माँ द्वारा श्रीमद्भगवद्गीता, प्रमुख उपनिषदों और अन्य ग्रंथों की व्याख्याएं भी उपलब्ध थीं।

डॉ. राज गुप्ता, डॉ. लीना गुप्ता एवं डॉ. राहुल गुप्ता को उनके अथक और समर्पित प्रयासों के लिए विशेष धन्यवाद।

सोशल वर्कर्स होम – फाउंडर्स डे

20 नवंबर को, करनाल सोशल वर्कर्ज़ होम की संस्थापक और परम पूज्य माँ की बहन सुश्री निर्मल आनन्द को उनकी स्मृति में आयोजित वार्षिक कार्यक्रम में याद किया गया। स्नेहपूर्वक 'निर्मल बहनजी' के नाम से जानी जाने वाली उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन बेसहारा महिलाओं और बच्चों की सेवा तथा उत्थान में समर्पित कर दिया।

कार्यक्रम में अर्पणा परिवार, मित्रों और सहयोगियों की बड़ी संख्या में उपस्थिति रही। श्रीमती गायत्री सचदेवा (बबली) द्वारा प्रस्तुत वार्षिक रिपोर्ट प्रशंसनीय रही।

श्री कृष्ण अरोड़ा ने उर्वशी समूह और खालसा कॉलेज के छात्रों के साथ सुंदर भजन और कई गीत गाए।

कार्यक्रम में विद्यार्थियों को उनकी शैक्षणिक उपलब्धियों के लिए पुरस्कार दिए गए तथा शिक्षकों को भी सम्मानित किया गया।

LET'S EMPOWER VULNERABLE WOMEN AND CHILDREN AS THEY REACH FOR THEIR DREAMS!

ARPANA TRUST

EDUCATION FOR DISADVANTAGED CHILDREN

- Tuition support for classes 1-12 pre-school Classes for toddlers, cultural activities.
- Vocational training classes.

HUMANE VALUES FOR AN EQUITABLE SOCIETY

- Dramas, Publication, Satsangs
- Charitable grants for the vulnerable
- Health/Socio economic assistance

DONATE ONLINE

ARPANA RESEARCH & CHARITIES TRUST

PROVIDES MODERN HEALTH CARE THROUGH

- Arpana Hospital for free /affordable health care.
- Arpana Medical centre, Himachal

EMPOWERING WOMEN

- Self Help Group & SHG Federations.
- Micro – Credit, Income generation, community development

EMPOWERING THE DIFFERENTLY ABLED

- Differently Abled Persons Organizations for health, assistive devices, certifications and income generation.

DONATE ONLINE

DONATIONS TO ARPANA ARE 50% TAX EXEMPT UNDER SECTION 80G, INCOME TAX ACT 1961

Cheques in favour of Arpana Trust and Arpana Research & Charities Trust to be sent to:
Information & Resources Department
Arpana, Madhuban, Karnal- 132037, Haryana

Donations through Direct Bank Remittance:
Bank of India, Karnal (IFSC Code: BKID0006750)
Arpana Research & Charities Trust; Bank Account No. 675010100100014,
Arpana Trust Bank Account No. 675010100100001

FOREIGN DONATIONS TO ARPANA ARE 100% TAX EXEMPT WHEN SENT THROUGH:

Arpana Canada
Mrs. Sue Bhanot, 7 Scarlett Drive, Brampton,
Ontario L6Y 359 Canada
Email: suebhanot@rogers.com

India Development & Relief Fund (IDRF)
Mr. Vinod Prakash, President, IDRF, 5821 Mossrock Drive,
North Bethesda, MD 20852 USA
E mail: vinod@idrf.org

Contact Us:
Harishwar Dayal, Executive Director +91 98186 00644
Email us: arct@arpana.org | at@arpana.org
Aruna Dayal, Director Development +91 99916 87310
Websites www.arpana.org www.arpanaservices.org